नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी

पृष्ठभूमि :

भारतीय लोक कलायें मानव के क्रम विकास के साथ–साथ समानान्तर रूप से विकास के कई सोपान चढ़ती आयी हैं। भारतीय लोक कलायें आज भी भारतीय समाज का अभिन्न और अविभाज्य अंग हैं। अपने उदय के साथ ही उनका उद्देश्य भारतीय दर्शन, आध्यात्म, इतिहास एवं सामाजिक परिवर्तनो के विभिन्न पहलुओं को आने वाली पीढ़ी के लिए दर्ज करना रहा होगा। लोक कलाओं के मूल में तमाम सामाजिक परिवर्तन मानव और मानवता के हितार्थ ऐसे सभी विषयों को अपना विषय बनाकर सुरूचिपूर्ण ढंग से प्रक्षेपित करना ताकि आम जनमानस के लिए वे सरलता और सहजता से ग्रहण करने योग्य हो।

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के मूल में भी आप जाते है तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पहले समाज मे नाट्य आया होगा जो कि वस्तुतः लोकनाट्य ही रहा होगा और उसके बाद ही उसका शास्त्र बना होगा। लोक कलायें अपने ढंग से जन साधारण के सरोकारों, रूचियो एवं आवश्यकताओ के मद्देनजर विकसित होती है, लोकप्रिय होकर स्थापित होती हैं। बहुत सी लोक कलायें अपने ही स्वरूप मे विभिन्न भाषायी और तमाम क्षेत्रो तक विस्तारित होती है और अक्सर भाषा और क्षेत्र के आधार पर वहां की स्थानीय प्रतीकों और शैलियों को अपने में समाहित कर एक होते हुए भी एक दूसरे से भिन्न हो जाती है। लोक कलाओं का क्षेत्र इतना अधिक विस्तारित होता है कि इसको सुर, लय, ताल मे बांधना और शास्त्रगत करना बेहद मुश्किल हो जाता है। क्योंकि एक ही शब्द के अलग–अलग क्षेत्रों में 'स्वराधात' अलग–अलग होते हैं। लोक कलाओं की बेहद लोकप्रिय शैलियों को लेकर जब किसी एक विशेष शैली मे हम बांध देते है तो उनके लिए वही शास्त्रगत होना हो जाता है। शास्त्रगत होने के बाद मे किसी भी कला का विकास रूक जाता है यद्यपि कुछ प्रयोगो के लिये जगह रहती है जिसको अक्सर मान्यता नहीं मिलती।

लोक कलायें हमारी जीवन शैली है जिसमें से कुछ कलायें आज प्रदर्शनकारी कलाओं के तौर पर प्रस्तुत होती देखी जा सकती हैं। निःसंदेह यह सभी अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें है

जिसको हमने बड़ी देर से समझा और जब तक समझते तब तक बहुत सी कलायें विलुप्त हो गयी या विलुप्ति के कगार पर है या उनका स्वरूप ही बिगड़ गया।

भारतवर्ष तीज–त्योहारों का देश है, भारतवर्ष रीति–रिवाजों का देश है, भारतवर्ष आध्यात्म और दर्शन की दृष्टि से सर्वोपरि है, भारतवर्ष बात–बात में, लगभग प्रत्येक माह और पक्ष मे पर्वो का देश है, उत्सव का देश है और सभी के मूल्य में लोक कलाओं के बगैर, लोक रंगों के बगैर सब सूना है। इसलिए यह हम दावे से कह सकते हैं कि भारतवर्ष लोक कलाओ का देश है, लोक कलाकारों का देश है...

लोक कलाओं ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाहन किया है अर्थात् समाज ने कलाओं और कलाकारों का ख्याल रखा तो बदले में कलाओं और कलाकारों ने समाज को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध किया। लोक कलायें न होती तो हम अपने गौरवमयी इतिहास से अनभिज्ञ होते। हम अपने यशस्वी राजाओ, ऋषि–मुनियों, वीर पुरूषो/महिलाओ एवं महान व्यक्तित्वों के बारे में न जान पाते। लोक कलाओं ने ही जल एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अहम भूमिका निभाई और जन–जन को जागरूक किया कि इनका सह अस्तित्व बेहद जरूरी है। लोक कलाओं के ही माध्यम से तमाम सामाजिक और वैचारिक क्रान्तियां भी देश में देखी गयीं। जिस दौर मे समाचार पत्र, रेडियो टेलीविजन आदि कुछ भी नहीं थे उस दौर मे राजा से जनता एवं जनता से राजा तक समाचार और सूचनाएं लोक कलाओं के माध्यम से ही प्रेषित होती थी। स्वाधीनता संग्राम मे लोक कलाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वरना आजादी के मुद्दे को सुदूर, दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों मे ले जाकर जन आन्दोलन बनाना बेहद दुष्कर होता। लोक कलाओं के योगदानों की चर्चा इसलिए कर रहा हूं क्योंकि साहित्य की एक धारा वो भी है जो लोक से इतर वर्ग को 'शिष्ट' कहती है जिससे बगैर कहे जनसाधारण की रूचियां, सरोकार एवं कलायें 'अशिष्ट' प्रतीत होती है। साहित्य की यह विशेष धारा जो राजमहलों मे रहने वाले या उनसे जुड़े अभिजात्य वर्ग को ही शिष्ट मानती थी और इस शिष्ट समाज के द्वारा जो भी रचनायें और कलायें बनाई गई वे शास्त्रीय कहलायी। सभी शास्त्रीय कलाये लोक कलाओं पर ही आधारित हैं। बस उन्हे थोड़ा परिस्कृत करना और केवल अभिजात्य वर्ग मे प्रस्तुत कर देने से अपने को उन्होने शिष्ट मान लिया और कलाओ के किसान लोक कलाकारों को अशिष्ट???

यह विरोधाभास लगभग सभी जगह देखा जाता है और मैंने इस खोज के दौरान यह पाया कि संस्कृत नाटकों की परम्परा से बहुत पहले लोक नाटकों की निश्चित रूप से एक मजबूत परम्परा चलन में थी यहां तक कि स्वांग भी। कालिदास जी अपने नाटक मालविकाग्निमित्रम में यह श्लोक दर्ज किया है–

''देवानामिदमामनन्ति मुनयः शान्तं ऋतं चाक्षुषं,
द्रेणेदमुभाकृतव्यतिकरे ''स्वांगे'' विभक्तम् द्विधा।
त्रैगुण्योद्भवमत्र लोक चरितं नानारसं दृश्यते,
नाट्य भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।।''

स्वांग, रास, रासक, रहस, भगत, स्वांग सपेड़ा, सांगीत एवं नौटंकी आदि लोक नाट्यो मे बहुत समानता है और थोड़े थोड़े परिवर्तनों या तत्कालीन निर्देशकों द्वारा किये गये प्रयोगों के आधार पर इनके भिन्न–भिन्न नामकरण हैं। भरत मुनि जी के भी पहले कई जगह पर 'संगीतक' का जिक्र है जो कि संगीतमय नाटक अथवा गेयप्रधान लोकनाट्य प्रतीत होते हैं। इन सभी लोक नाट्यो के विषय मुख्यतः आध्यात्मिक विषयों के इर्द गिर्द या देवी देवताओं की कथा या ऋषि मुनियों के जीवनवृत्त और उनकी शिक्षाओं पर आधारित होता था। बाद में इनमें राजा–रानी, वीर पुरूषों आदि का समावेश हुआ जिनका उद्देश्य समाज में असाधारण उपलब्धियों, धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा जैसी शिक्षायें शामिल थीं। इसमें मुझे कुछ भी अशिष्ट नहीं लगता वरन् कला की उच्च स्तरीय उपयोगिता परिलक्षित होती है जो कि नये विचार, नये दृष्टिकोण और नयी मनःस्थिति के प्रतिस्थापन मे सहायक होती थीं। इसके बाद प्रेमाख्यानक विषय भी शामिल हुए और इसी तरह धीरे धीरे लोक नाट्यों के कथानक समृद्ध होते गए। इनको प्रस्तुत करने के लिए साजो समान में स्वर के लिए सारंगी और ताल के लिए ढोलक, मजीरा इत्यादि। प्रस्तुति का माध्यम मुख्यतः गायन प्रधान था हलांकि कथानक के बीच बीच मे संवाद या वार्ता भी होती थी। मुख्यतः गायन प्रधान रखने के पीछे जो कारण समझ मे आता है कि रस की निष्पत्ति में कोई गलती न हो इसीलिए विभिन्न रागो को सही ढंग से, सही समय पर और सही स्थान पर इस्तेमाल करने में लोक नाट्य के कलाकार दक्ष थे और इसी वजह से दर्शकों पर लोक नाट्यों का प्रभाव लोक कला के सभी विधाओं में सर्वाधिक था। अक्सर लोक

नाट्य के कलाकार गायन, नृत्य एवं अभिनय मे दक्ष होते थे और लोक नाट्य सभी प्रदर्शनकारी कलाओं का एक खूबसूरत गुलदस्ता था।

सांगीत की लोकप्रियता सिर चढ़कर बोलती थी। मथुरा के लाल दरवाजा अखाड़ा के गुरू मनिया भट्ट से सांगीत और भगत की शिक्षा लेकर इलाहाबाद में लौटे लाला कल्यानचन्द ने इलाहाबाद मे मण्डली बनाकर प्रस्तुतिया आरम्भ कर दी उन्होनें खुशीराम को प्रेरित कर 'सांगीत रानी नौटंकी' का लिखवाया। इसे जर्मन शोधार्थी डा0 कैथरीन हेंसेन के अनुसार इसे 1882 मे वाराणसी से प्रकाशित किया गया। इसकी कहानी मुल्तान के राजा की बेटी के इर्द गिर्द घूमती है जिसका वजन बहुत कम था और इसीलिए राजा निरन्तर चिन्तित रहता था यह राजकुमारी का नाम नौटंकी था क्योंकि जब यह पैदा हुई थी तो वजन कम होने के कारण इसको तब के चलन के नौ (9) टका (सिक्का) और कुछ फूल से तौला गया था इसीलिए इसका नाम राजकुमारी नौटंकी रखा गया। इसी राजकुमारी नौटंकी की रानी नौटंकी बनने की प्रक्रिया इसका कथानक। राजा मुल्तान इसके लिए निरन्तर चिन्तित रहते हैं और देश–विदेश के तमाम वैद्य आदि से उपचार का भी कोई लाभ नहीं हुआ। लेकिन अचानक राजकुमारी का वजन बढ़ता है और राजा बहुत खुश होता है लेकिन गुप्तचर बताते हैं कि राजकुमारी को एक मामूली सिपाही फूल सिंह से प्यार हो गया है जिससे राजा द्वारा फूल सिंह को देश निकाला दे दिया जाता है। फूल सिंह जाते जाते राजकुमारी को सरे दरबार कह के जाता है कि वह घबराये नहीं बहुत शीघ्र वह उसे ले जायेगा और बड़े रोचक ढंग से वह राजकुमारी को हासिल करता है जिसमें बाद मे राजा भी अपनी सहमति दे देते हैं और कहानी का अंत सुखांत होता है। इस कहानी मे पहली बार एक आम सिपाही या आम जन की प्रेम कहानी मंच पर प्रस्तुत की जाती है जिसे आपार ख्याति मिलती है क्योंकि पहली बार अपने जैसे आम जन फूल सिंह को नायक की जगह पर देखता है। यह सांगीत रानी नौटंकी का इतना लोकप्रिय होता है की भविष्य के सभी सांगीत नौटंकी हो गये। जैसे गांव मे कोई व्यक्ति कहता है कि दांत साफ करने वाला कोलगेट दे दो या जब वह कहता है कपड़ा धोने वाला रिन दे दो इसी प्रकार सभी सांगीत नौटंकी हो गये जबकि नौटंकी एक प्रस्तुति की मात्र एक किरदार थी।

वह लोकनाट्य नौटंकी जिसका जादू सिर चढ़कर बोलता था, वह लोकनाट्य नौटंकी जिसको देखने के लिए जनमानस कई किलोमीटर तक पैदल चले जाते थे, वह लोकनाट्य नौटंकी जिसको बुजुर्ग सराहते थे, जिससे महिलाएं भावनात्मक तौर पर इतनी जुड़ी थी कि कई

प्रस्तुतियों में चुपचाप रोती रहती थी, वह लोकनाट्य नौटंकी जिसे घर के मुखिया सपरिवार जाकर देखना बेहद आवश्यक समझते थे, वह लोकनाट्य नौटंकी जो हमें ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, प्रेम कथायें, वीर गाथायें इत्यादि उत्कृष्ठ मंच सज्जा, साजो समान और खूबसूरत बानगी से पेश कर दिखाती थी कैसे धीरे–धीरे भोड़े नृत्यों और अश्लील गीतो की शरणस्थली बन गयी???

नौटंकी के कर्णधार जिनमें श्री इन्दरमन व श्री नथाराम शर्मा गौड़ (हाथरस), श्री लाला कल्यानचन्द व श्री रामराज त्रिपाठी (इलाहाबाद), पं0 किशन पहलवान व श्रीमती गुलाब बाई (कानपुर) आदि ने जिस शिद्धत से नौटंकी को शिखर तक पहुंचाया था उस समय तक नौटंकी की प्रस्तुतियों मे किसी भी प्रकार के नृत्य, नाच अथवा ओछे गीतों का कहीं भी पदार्पण का कोई भी प्रमाण नहीं मिलता। लोकनाट्य नौटंकी की प्रस्तुतियां इतनी सशक्त, इतनी सम्प्रेषणीय थी कि समाज के उच्च वर्ग यहां तक कि नवाब और राजे–महाराजे स्वयं मण्डलियां चलाया करते थे। नाट्य तत्व की प्रमुखता होने के कारण मंच निर्माण, वस्त्राभूषण, साजो समान बेहद कीमती और उच्च दर्जे का होता था।

- जिस नौटंकी ने सत्य हरिशचन्द्र, भक्त पूरनमल, भक्त प्रहलाद्, राजा भर्थरी, सती सावित्री, सती अनुसुइया आदि नौटंकियों को प्रस्तुत कर पूज्यनीय स्थान पाया होगा उसका नाच बन जाना बहुत ही दुखद है।
- जिस नौटंकी ने सिकन्दर–पोरस, अमर सिंह राठौर, राणा प्रताप, पन्नाधाय आदि नौटंकियों से हमे अपने देश के ऐतिहासिक वीर पुरूषों/महिलाओं से परिचित कराया हो उसका अश्लील गीतों पर भोड़े नृत्य करना एक उत्कृष्ठ लोकनाट्य के तिल–तिल कर मरने जैसा है।
- जिस नौटंकी ने स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई को जन आन्दोलन बनाने हेतु रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारीबाई, शहीद कुंवर सिंह, शहीद झूरी सिंह आदि के संघर्षो को इसलिए प्रस्तुत किया ताकि स्वाधीनता संग्राम एक जन आन्दोलन बन सके उस नौटंकी का फूहण हो जाना बेहद निराशाजनक है।

- जिस नौटंकी ने लैला–मजनू, शीरी–फरहाद, सोहनी–महिवाल, सलीम–अनारकली, स्याहपोश आदि नौटंकियों ने पाक मोहब्बत का पैगाम दिया हो उस नौटंकी का फूहण हो जाना नौटंकी प्रेमियो को स्तब्ध करता है।

लोकनाट्य नौटंकी की लोकप्रियता इस कदर थी कि समाज का हर मानिन्द आदमी इसको अपने यहां कराना चाहता था। राजनेता, उच्च अधिकारी, प्रतिष्ठित व्यापारी एवं सरकारी व गैर सरकारी संगठन अच्छी नौटंकियों को आमंत्रित करते अपने दर्शक वर्ग के दिल में अपनी छवि सुदृढ़ कर लेते थे। लोकनाट्य नौटंकी ने भारतीय फिल्मों के स्वरूप को भी प्रभावित किया क्योंकि जब भारतीय फिल्मे बनना शुरू हो रही थी तो नौटंकी अपने चरम पर थी और उसकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर भारतीय फिल्मो ने अपना स्वरूप नौटंकी से उधार लिया। यानि एक कहानी प्रस्तुत करने की विधा जिसमें किरदारो के भावो को उल्लेखित करने के लिए गीतों का प्रयोग किया जाता है। पूरे विश्व में किसी भी देश की फिल्मों मे गीत का प्रयोग नहीं होता। ये प्रथा भारतीय फिल्मों ने शुरू की और निश्चित रूप से श्रेय भारत की अप्रतिम लोकनाट्य नौटंकी को जाता है। पहले की फिल्मों मे तो 50–60 गाने तक होते थे।

नौटंकी के कलाकार बनने की प्रक्रिया बेहद कठिन और लम्बी थी 8–10 वर्ष के प्रशिक्षण से पहले शायद ही कोई कलाकार मुख्य भूमिका के लिए चयनित होता हो लेकिन नौटंकी की आशतीत सफलता और बढ़ी हुई मांग की वजह से नौटंकी को कम जानने वाले या एकदम न जानने वाले गायकों और नृत्यांगनाओं का प्रवेश हुआ। जो नौटंकी दोहा, चौबोला, दौड़, बहरेतवील, शिकस्त, लावनी, थियेटर, माण्ड, डेढ़ तुकी, कलांगड़ा, आदि गायन शैलियो मे निश्चित स्तर की विशेषज्ञता माँगती थी इसके उपरांत कलाकार को गजल, कव्वाली, लोकगीत आदि मे भी पारंगत होना होता था। इसके साथ–साथ अभिनय द्वारा समस्त भावों एवं रसों की निष्पत्ति मे निपुण होना जरूरी होता था। अर्हताएं अभी खत्म नहीं हुयी। मुद्राएं, संवाद अदायगी और वार्ता से भी दर्शकों को बांधने की कला आनी जरूरी होती थी ऐसे में एक बात तो स्पष्ट है कि इतनी मेहनत करके नौटंकी कलाकार बनना सबके बस की बात नहीं होती थी। लेकिन नौटंकी की बढ़ी हुई मांग, नाम, शोहरत और अच्छे दाम के लिए कोई भी कलाकार नौटंकी की प्रस्तुति करने के लिए हां कर देता था आये या न आये। अब जब काम ले लेता था तो कुछ न कुछ करके दिखाना होता था और ऐसी ओछी हरकतो को सराहने वाला कोई न कोई दर्शक

वर्ग तो रहा ही होगा। ऐसे लोगो की धीरे–धीरे बहुतायत हो गयी और फिर एक होड़ सी लग गई कि कौन सबसे अश्लील गा सकता है, कौन सबसे फूहण नृत्य कर सकता है, कौन अभिनय भाव प्रधान गायकी से इतर कुछ भी करके नौटंकी के नाम पर कुछ भी कर सकता है। इसके तह मे जाइये तो यही कारण केवल नहीं है सिद्ध नौटंकी कलाकारों द्वारा बहुत लम्बे समय तक जब एक ही कहानी या स्क्रिप्ट पर काम करते रहने के कारण जनता ने उन पर नौटंकी मे अन्य चीजें शामिल करने का दबाव बनाया। इससे उन क्षेत्रों में अश्लीलता और केवल भोड़े नृत्य वाले तत्व शामिल हो गये बतौर मुन्ना मास्टर ***''अब तो कलाकारो को छोड़ियों दर्शको को स्क्रिप्ट रट गयी है क्योंकि उसमे सदियो से कोई बदलाव नहीं हुआ अब तो दर्शक चिल्ला कर कह देते हैं कि कोई मास्टर बैठ जा बैठ जा, कोई नाचने वाली लड़की भेज... नौटंकी का बहुत ही बुरा समय चल रहा है।''*** यही सब कारण थे कि नौटंकी के दर्शक वर्ग में कमी आयी सबसे पहले महिलाएं और बुजुर्ग हटे फिर बच्चों को हटाया गया और अब नौजवान भी नहीं जुड़े है कुछ एक को छोड़कर। जिस नौटंकी का गौरवपूर्ण इतिहास था, जो नौटंकी लोकनाट्यो मे श्रेष्ठ थी अब वह समाज मे गाली बन गयी या नकारात्मक रूप में उपयोग मे लायी जाने लगी– ***''नौटंकी न करो'', ''नौटंकी करता/करती है'', ''मेरे सामने नौटंकी न करो''*** अर्थात सामने वाला जो बोल रहा है और जो कह रहा है उसमे कोई सत्यता नहीं है। इस नकारात्मकता का कारण यह था कि अब इसके करने वाले बताते कुछ थे करते कुछ थे, अब करने वालो की वेशभूषा और शारीरिक बनावट किरदार से मेल नहीं खाती थी, अब नौटंकी गाने वाले की राग और भाव कतई किरदार की मनःस्थिति के अनुसार नहीं थे सब नकली था, सब झूठा था क्योंकि करने वाले भी नकली थे, झूठे थे क्योंकि बिना नौटंकी समझे बगैर नौटंकी जाने उन्होने नौटंकी जैसे बेमिसाल लोकनाट्य को प्रस्तुत करने की हामी जो भर ली थी।

लोकनाट्य नौटंकी, सबकी दुलारी नौटंकी, आवाम के दिलों पर राज करने वाली नौटंकी, अपनी माटी की सोंधी महक लिए नौटंकी, जीवन्त नौटंकी, रसवन्त नौटंकी, आह नौटंकी, वाह नौटंकी न जाने और किस–किस सम्बोधन से याद की जाने वाली नौटंकी का रूप आज बिगड़ गया है, उसका सौन्दर्य मलिन हो गया है, श्रृंगार उजड़ गया हैं और मिठास फीकी पड़ गयी है क्योंकि नौटंकी, नौटंकी न रहकर केवल नाच बन गयी हैं। हाथरस, मथुरा, अलीगढ़, बुलन्दशहर, इटावा, कासगंज, फिरोजाबाद, आगरा, ग्वालियर, मुरैना, बरेली, शाहजहांपुर, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बंदायूँ में थोड़ी–बहुत धधक छोड़कर नौटंकी अधिकांशतः नाच में परिवर्तित हो गयी।

नौटंकी के बुजुर्ग कलाकार हताश, निराश, बुझे हुये दिल से पुराने दिनों को याद कर संतोष कर लेते हैं और जब कभी सरकारी कार्यक्रम मिलते हैं तो विधिवत नौटंकी का प्रदर्शन वहीं करने का मौका मिलता है। मण्डलियां लगभग खत्म है और कार्यक्रम की उपलब्धता पर कलाकार जोड़ लिए जाते हैं। इन क्षेत्रों मे नौटंकी सबसे पहले नौटंकी केवल किस्से–कहानी को गीतात्मक, नाट्य के रूप में पेश करते थे। कालान्तर में उस नौटंकी के बीच में अश्लील, गीत और भोड़े नाच होने लगे और अब वह नौटंकी केवल नाम की रह गयी है जिसमें केवल नाच है और बीच–बीच में यदा–कदा, कभी–कभार और कहीं–कहीं ही नौटंकी।

वहीं इससे पलट इलाहाबाद की नौटंकी जिसमें कभी भी रचनाधर्मिता शिथिल नहीं पड़ी, जहां पर निरन्तर सामायिक विषयों पर नौटंकी लिखी और प्रस्तुत की जाती रही वहां पर कराये गये सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जितने मण्डलियां समस्त नौटंकी के गढ़ो में है उससे ज्यादा नौटंकी मंडलिया अकेले जनपद इलाहाबाद में है। यद्यपि कई जगहों पर और कई मण्डलियों में नाचरूपी विकृति प्रवेश कर गयी है। लेकिन नौटंकियों की प्रस्तुति अवश्य होती है और नाटक पूरा खेला जाता है।

इन्हीं तमाम चुनौतियों के बीच आज से लगभग दो दशक पहले स्वर्ग रंगमण्डल, इलाहाबाद ने बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से नौटंकी को नये कथानकों से जोड़ा और उसी के चलते मुंशी प्रेमचन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, डा0 रामकुमार वर्मा आदि की कहानियों और नाटकों को नौटंकी में रूपांतरित कर नौटंकी को पुनः उसके गौरवशाली प्रतिष्ठा लौटाने का कार्य किया। स्वर्ग रंगमण्डल की प्रस्तुतियों समाज, राष्ट्रीय समाचार पत्रों एवं मैगजीनों के द्वारा सराही गयी। भावपूर्ण गायकी और अभिनय के साथ में जब–जब स्वर्ग रंगमण्डल की नौटंकियां मंचित की जाती हैं तो शहर और गांव के दर्शकों का हुजुम उसको देखने के लिए जुटता है। देश भर के लगभग सभी प्रतिष्ठित महोत्सवों में स्वर्ग रंगमण्डल अपनी नौटंकियों की उत्कृष्ठ प्रस्तुतियां दे चुका है। स्वर्ग रंगमण्डल अब तक बिहार, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, गोवा, चंडीगढ़ आदि राज्यों में प्रस्तुतियों के साथ–साथ विश्व प्रदर्शनकारी कला महोत्सव 2004, लाहौर में भी प्रस्तुति दे चुका हैं और अब आई0सी0सी0आर0 द्वारा भी पंजीकृत है।

अतुल यदुवंशी

भारतीय लोक कला रूपों के माध्यम से भारतीय अस्मिता, मूल्यों और संस्कृति की सुदृढ़ आधारभूमि गढ़ने–रचने, आकार देने के संकल्प का नाम हैं– अतुल यदुवंशी। लोक कलाकारों को बेहतर जीवन, अपनी कला में आस्था सुरक्षित रखने और आशाओं के साकार करने की शक्ति की अभिव्यक्ति हैं– अतुल यदुवंशी। लोक नाट्य नौटंकी में समकालीनता, प्रयोगधर्मिता, नवोन्मेष सम्पृक्त कर बहुविध ढंग से समृद्ध कर नौटंकी को नवजीवन देने वाले सर्जक की संज्ञा हैं– अतुल यदवुंशी।

अतुल यदुवंशी यानी भारतीय लोक कलाओं के प्रोत्साहन, संवर्द्धन, संरक्षण आदि के प्रथम पुरूष, अतुल यदुवंशी यानी लोक नाट्य नौटंकी के पुर्नजागरण के एकमात्र सूत्रधार। अतुल यदुवंशी यानी भारतीय लोक कला महासंघ के अध्यक्ष ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के लाखों कलाकारों के संघर्ष का सेनापति, उनकी उम्मीदों का पंख, उनके संकल्पों की ज़िद, उनके भरोसे का नायक ..... और बहुत कुछ।

भारतीय लोक कलाओं एवं लोक कलाकारों के बहुआयामी विकास के सर्वाधिक विशिष्ट एवं विश्वसनीय व्यक्तित्व अतुल यदुवंशी ने लगभग उपेक्षित और वर्ग विशेष तक सीमित लेकिन अप्रतिम लोक नाट्य नौटंकी को मुख्य धारा का प्रदर्शनकारी लोक नाट्य बना दिया। वह नौटंकी कला में साहित्यिक और अर्थपूर्ण प्रयोगों के गायक हैं। यही कारण है कि नौटंकी समकालीन भारतीय कला जीवन का आवश्यक हिस्सा है बल्कि अभिजात्यों मे भी सम्मानित और लोकप्रिय। उन्होनें नौटंकी को अपने देश के साथ दूर देशों मे भी प्रतिष्ठा दिलवायी। बहुप्रतिष्ठित मंचों पर भी अतुल की नाट्यधर्मिता की गूँज–अनुगूँज लगातार सुनी और सराही जाती है। वह अपने नौटंकी प्रयोगों में परम्परा की रक्षा करते हैं। प्रयोगों में उसे समृद्ध करते हैं, परंपरा का नवीनीकरण करते हैं। महाकवि कालिदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द जैसे महान रचनाकारों की कालजयी कृतियो का जैसा सुविचारित, सुगठित, सुचिंतित दृश्यानुवाद अतुल यदुवंशी ने अपने नाट्य प्रयोगो मे किया है, वह समालोचको–दर्शकों में चर्चा एवं प्रशंसा का विषय है।

भारतीय लोककला महासंघ के अध्यक्ष के रूप में अतुल यदुंवंशी ने देश के लोक कलाकारों की चिंता, दशा को सामूहिक संवेदना का विषय बनाया है। महासंघ के आयोजनों में स्वतः स्फूर्ति से देश भर के लोक कलाकारों का जुट जाना एक बड़ी शक्ति और परिवर्तनों का संकेत है। भारतीय लोक कला महासंघ को उन्होनें अत्यन्त त्याग, कौशल, जिजीविषा से शक्ति सम्पन्न किया है। उसी का परिणाम है कि आज देश के हर भाषा, शैली, प्रांत के कलाकार स्वयं को भारतीय लोक कला महासंघ में सुरक्षित अनुभव करते हैं।

अतुल यदुवंशी, स्वर्ग रंगमण्डल, भारतीय लोक कला महासंघ, दर्जनों प्रस्तुतियों के सैकड़ों प्रदर्शनों, उनके जीवन की 'फकीरी', उनकी निजी यायावरी, रचनाकार व्यक्तित्व, जिंदगी से मुठभेड़ का निराला अंदाज, लाखों कलाकारों को सचेत, सजग करने का आह्वान–आंदोलन का स्वप्न–संकल्प आदि सब मिलकर प्रदर्शनकारी संदर्भों में सांस्कृतिक–समाजशास्त्रीय आख्यान रचते हैं। उनका सृजन कर्म और नेतृत्व कर्म संस्कृति समृद्ध भविष्य की यात्रा तय करने के लिए आलोकित पथ है।

प्रवीण शेखर

प्रख्यात रंग निर्देशक, लेखक एवं लोक कला शोधार्थी

इलाहाबाद

AUGUST 24, 2012 — Folk Art

Nautanki again

Atul Yaduvanshi and his repertory company have been trying to revive the traditional folk theatre form in parts of Uttar Pradesh. BY RANA SIDDIQUI ZAMAN

A musical play interspersed with songs, Nautanki originally drew its **themes from mythology and history.** Over time it lost audience support, and now it is a dying artistic tradition.

RAJEEV BHATT

ATUL YADUVANSHI. APART from organising documentation of the folk artistes of Uttar Pradesh and some other States, he is trying to get government support to preserve the theatre tradition.

NEW DELHI was recently treated to its first performance of *Malvikagnimitram*, a "Nautanki" played in the traditional folk style but with some originality in content, at Stein Auditorium, courtesy Atul Yaduvanshi, 45, the theatre director from Allahabad who has taken up the uphill task of reviving Nautanki through his Swarg repertory company.

The play was true to the style of Nautanki, which is a musical play interspersed with songs meant to enhance the moods and emotions of the characters. A few artistes, preferably good singers, introduce the story by singing in chorus. The play also ends with a chorus. Yaduvanshi's play was lavish with numerous characters, an assortment of musicians and able singers, multiple stage backdrops and ostentatious costumes. The artistes appeared poised and comfortable in their roles. The background music at times was out of place or dominated the dialogues, but the two-hour performance, with minimal diction flaw, was, nonetheless, captivating.

It is based on Kalidasa's story of the politics of power and love in the kingdom of Vidarbha, but Yaduvanshi has rewritten it using carefully chosen words in pure but understandable Hindi and interspersed the performance with songs based on classical ragas.

BRIEF HISTORY

Nautanki, which is a form of folk theatre, with songs and dance based on classical ragas, was considered a high-class entertainment in the Mughal period. It finds mention in Abul Fazal's *Ain-i-Akbari*. Akbar himself was a great cattle drummer and he, as documented history goes, used this skill for "Swaang", as Nautanki was called in those days. *Naurang-e-ishq*, written in 1685 by the famous Rajasthan writer Maulana Abdul Ghanimat, also mentions Nautanki. The last Nawab of Awadh, Wajid Ali Shah, had an annual budget of Rs.30,16,000 to pay folk artistes and he had two special dress designers employed to make costume for Sangeet. Rahasya Manzil in Lucknow still bears testimony to the Nautankis that were performed there, sponsored by the Nawab. Kalidasa, who is believed to belong to the Gupta period, wrote about "Sangeet", and so did the 16th century poet Tulsidas.

In pre-Independence India, Nautanki was used to spread messages of patriotism. Between 1924 and 1936, it was banned in Allahabad. Jawaharlal Nehru was deeply interested in the theatre form. During one of his stints in jail, he met Ramdas Tripathi, a well-known Nautanki director from Allahabad.

FRONTLINE 107

FRONTLINE
AUGUST 24, 2012 — WWW.FRONTLINE.IN — INDIA'S NATIONAL MAGAZINE — RS.25

WATER RESOURCES KHANDWA — Tapping profits 32
OBITUARY LAKSHMI SAHGAL — Communist captain 115
DEMOGRAPHY KERALA — Shades of grey 123

FRONTLINE

YADUVANSHI WITH SUKKHU Dada, 83, a "naqqarchi", or drummer, from Madhopur in Uttar Pradesh. Dada, whose home was washed away by rain, lives in a polythene shed.

A SENE FROM "Malvikagnimitram" staged recently in Delhi by Yaduvanshi's group.

BY SPECIAL ARRANGEMENT

They became friends, and Nehru started calling upon folk theatre directors/artistes to spread the message of nationalism. Nautanki groups would help to collect audiences when nationalist leaders delivered speeches at public meetings. There is a story of how Kamala Nehru, while addressing one such meeting where the audience was gathered by Nautanki groups, was taken off the podium by troops who pulled her by the hair. The incident is mentioned in a report in *Suraji Ranbheri*, which was published by the Department of Culture and the Department of Information, Uttar Pradesh, on the occasion of the 40th anniversary of India's Independence. The area where this happened started being called Kamla Nagar by its residents.

Later, Nautanki also formed the basis of Bollywood cinema, with song and dance sequences woven into the narrative. People now think of Nautanki as a play with tantalising songs bordering on crudity. The very word "nautanki" is now used in a derogatory sense, implying a piece of futile play-acting to influence someone. The original style of Nautanki, however, was totally bereft of frivolity. Musical plays interspersed with songs and dialogues in verse, Nautankis usually take their themes from mythology or history, stories such as those of Raja Harishchandra or Sultana Daku. This, gradually, led to a thinning of interest among both the artists and the audiences because, as Yaduvanshi explained, the scripts remained unchanged over several centuries. "People were bored with watching the same Nautanki repeatedly, and artistes wouldn't come on rehearsals because they had crammed the dialogues over the years. From there actually began the fall of the Nautanki," he said.

There is a technical side to the story. The performance of a Nautanki required several changes in the stage backdrops. As these were mammoth curtains, it took about half an hour to change them, and this interval was used by the audience as tea breaks. A long performance would have several such breaks, and sometimes it would stretch to a whole day and even a night. The audience would, naturally, tend to drift away, and to retain them Nautanki groups started using nautch girls to entertain them with popular songs. On demand and payment of money, they would even repeat the song and dance.

Bereft of any other form of entertainment, rural audiences lapped up these performances, and gradually these breaks started to command greater popular attention from an audience that already knew the story anyway. Many among the audience would even shower money on the dancers. For the cash-strapped Nautanki groups, such songs brought in money, and the newly rich groups started travelling more to make money.

Slowly, around the middle of the last century, these songs and dances overshadowed the otherwise dignified Nautanki and edged out the dialogues to a minimum. Yaduvanshi says there were several incidents where senior folk artistes were humiliated as members of the audience, impatient with the long dialogues, stood up and said, "Go back old man, send the [dancing] girl in."

Some years ago, the Swarg team started going from village to village in search of folk artistes and trying to revive the folk form by performing. Yaduvanshi, who is himself a folk artiste, recalls: "My theatre guru Shanti Swaroop coaxed me to try and revive this folk theatre. During my research, I was surprised to see that there was no documentation on the form. I gathered some five or six people and set out to do a Nautanki in its original form. Such was the image of the Nautanki that if anyone asked what we were doing, we would say, 'we are doing a folk drama' and add 'Nautanki' in whispers. If we used the word Nautanki, they would look at us with contempt and even laugh at us."

Yaduvanshi said that when he started doing folk dramas, the governments of Delhi and other States invited him to perform. "But they would pay barely Rs.200-250, and rooms in the guest houses where the artistes were housed were dirty, with smelly mattresses spread out on the floor. I saw that even folk artistes such as Padma Shri awardee Teejan Bai and Gulablo Bai were given the same treatment. It was humiliating. I looked up the UNESCO [United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation] guidelines for the welfare of folk artistes and found that folk artistes around the world were hugely respected and well paid to perform. A UNESCO convention once described folk artistes as living human treasures."

Yaduvanshi started documenting folk artistes in 2002. In 2007 he started travelling to different States for performance, research and documentation. His group officially has 43 members, but folk artistes from different States keep joining it from time to time on a freelance basis. "I can't pay all my artistes, so they keep on dropping out. For the past few years, the government has been providing salaries to 14 folk artistes/actors, Rs.6,000 for each, which is not really enough to retain them," Yaduvanshi said.

Allahabad, where Yaduvanshi is based, has as many as 97 groups of folk artistes. Nautanki had all but died out here, as in other Indian cities, because of waning audience interest and lack of funds, but the past five years have seen a revival of sorts. Nautankis originating here deal with all issues that are of interest to the common people, including corruption. Yaduvanshi's team, however, has taken its performances

and its research/documentation to places in Uttar Pradesh as diverse as Kanpur, Kannauj, Itawah, Firozabad, Agra. Mathura, Bharatpur, Hathras, Azampur and Jaunpur, and also to other States such as Rajasthan and Madhya Pradesh (Sagar and Gwalior). Fortunately, the team met several old people who used to be an integral part of Nautankis in their villages but later switched to other activities as the form lost popularity. The team members have had to rough it out during their travels to perform and to research, sometimes sleeping under trees. Getting folk artistes to talk to them is not easy either because these artistes are not always willing to talk about their work.

"Many of these tremendously talented artistes told me that Nautanki fetched them no recognition or money. Because of the blot that it started carrying, Nautanki artistes wouldn't like themselves to be associated with it anymore. My team, therefore, had major problems in making the artistes comfortable about telling their stories, talking about the proper/original methods of doing Nautanki, and the folk tales that they remembered, which could well be integrated for a successful Nautanki even today," Yaduvanshi said. Documentation, hence, was an uphill task. The absence of zonal cultural centres and field officers, he said, was to blame for the lack of documentation.

The team would also request old folk artistes to teach the original style to the younger generation in their villages. "Apparently, these artistes would agree to teach the new generation but in practice they wouldn't. We discovered that it was because they didn't like to miss the rare invitation for a performance that would fetch them some money."

Yaduvanshi needed to figure out how people could be brought back to this folk art. He found out that in 1882, the first recorded Nautanki, "Sangeet Rani Nautanki Ka", was immensely popular for it connected with the audiences. A story from Malwadesh, it was about an underweight princess who could be balanced with just a few coins or a bunch of flowers. Her condition rendered the king, her father, sleepless. Then one day, after treatment by many physicians had failed, the king noticed that she was gaining weight without any medication. He discovered that she had fallen in love with an ordinary soldier. The audiences, Yaduvanshi says, connected with the story because they felt that the ordinary soldier could be any one of them. In mythological or historical plays, they always remained outsiders, but here they became participants.

By 1998, Yaduvanshi picked up newer stories that rural audiences could connect with. He recalls, "We brought classic stories such as Premchand's *Kafan*, *Eidgaah*, *Boodhi Kaki*, *Panch Parmeshwar*, *Poos Ki Raat*, *Lahoo Bolta Hai*, and *Andher Nagri Chaupat Raja*, apart from stories by more contemporary writers such as Vinod Rastogi and Ashok Mishr. When the rural audiences saw characters talking about their problems and working out solutions through the medium of dialogues and songs, the crowds started to swell."

During intervals, too, the team engaged the audiences. "We would make 'characters' from the play sing about villagers' own joys and sorrows adapted from their own folk songs, for instance, on marriage functions, childbirth, death, grief or festive occasions. We would blend them in the stories in simple language that they could connect with."

As a result, the Swarg repertory company now receives good audience attendance wherever it stages Nautankis. It has modified itself in terms of proper costume, stitched by an in-house designer. Multimedia projectors have replaced background curtains, and the actors, preferably with inclination to music, are trained to sing.

RECENT CASUALTIES

While trying to work on the original form, the Swarg team discovered that several folk artistes had died before receiving the pensions they had run from pillar to post to secure. Prominent among them were the immensely popular 90-year-old Ramjiyavandas 'Bawla', known as Tulsidas in the Bhojpuri poetic world, who translated *Ramcharit Manas* into Bhojpuri; Nanhe Miyan, a famous *naqqarchi* or drummer from Aligarh; and Sarju Bhagat, the 82-year-old Allahabad-based 'Karinga' artiste.

Before he died in May this year, Sarju Bhagat was among the five living artistes of Karinga, a combination of song and dance drama largely belonging to the Scheduled Caste communities in northern India. The other four (Mahanand from Dhanupur, Lal Bahadur Raagi, Mukund Lal, Bansi Lal and Ram Awadh) are too old to perform any more. Karinga finds mention in the 800-year-old Sanskrit work of Vidyapati and also in the 20th century poetry of the Hindi poet Sumitranandan Pant. Nautanki artiste and lecturer Rajkumar Shrivastva says this art form gave the country musical instruments such as the Indrabazza or mridang, Dandtaal, Kasura and Singhadi (horn).

It is important that the folk artistes still living should be recognised before it is too late. Yaduvanshi's research so far has made him reach folk artistes who are up to 96 years of age: Chacha Chunni Lal from Hathras, Choudhry Chajjan (80), Nanda Devi and Radharani from Pilibhit (70 and 82 respectively), Hazra Begum from Agra (80), Ashfaq from Aligarh (86), and Munna Master from Bulandshahr, among others. But they are not interested in bequeathing the art to the next generation because it does not fetch them any monetary benefits. Besides, they are themselves somewhat alienated from it because of a stigma that has come to be attached to the folk art.

Yaduvanshi identified some 97 such groups in Allahabad alone, and almost three times as many in other States. "I didn't know that I had such a dense lineage," he says with pride. Whenever it is not performing, the Swarg team goes out to hunt out long-forgotten Nautanki artistes. The members stay in makeshift arrangements,

FRONTLINE

A NAUTANKI GROUP on its way to a performance in Delhi, in December 2009.

sometimes under trees, cook their own food and conduct workshops.

Yaduvanshi recently met Sukkhu Dada, 83, a *naqqarchi* from Madhopur. Dada lives under a polythene shed as his house has been washed away by rain. He was a *naqqarchi* in Allahabad's famous Shriram Sangeet Mandali whose owner, Ramdas Thripathi, was Nehru's friend. The group used to perform Nautankis with strong anti-colonial messages. The Swarg team has been trying to make sure that he gets a pension.

MINISTRY'S INVOLVEMENT

Yaduvanshi has been making efforts to get the government act to help folk artistes and revive the art forms they nurture. In November 2011, he organised the first Allahabad Declaration for Preserving Indigenous Tribal and Folk Art, a three-day event where folk artistes from 14 States gathered in Allahabad to work out how they could preserve Nautanki. The oldest person present was Chacha Chunni Lal, then 96. (He is 98 now and still waiting for his pension.) The next Declaration would be held in December this year, which would be attended by folk artistes from the south and the north-east too, Yaduvanshi said.

In mid-February this year, Yaduvanshi met Rahul Gandhi, Congress general secretary, and Kumari Selja, the Minister for Culture, and made a representation. "Rahul Gandhi gave us 45 minutes. We asked for a census of indigenous tribal and folk artistes. If we have one, we will find that we have 20 crore of them, including narrators and *kirtan* singers. The government has some schemes, including salaries for artistes and grants for NGOs [non-governmental organisations], but there are no research officers from the Ministry to locate these artistes and tell them to fill out pension forms and apply for salaries if they perform," Yaduvanshi said.

The Minister for Culture, he said, accepted the following recommendations: meetings to grant pensions to old artistes, to be organised every three months instead of only once a year; a national culture award to be given by the Culture Ministry every year; enhanced honorarium and better board and lodging for travelling folk artistes; and incorporation of folk art practitioners in the Ministry's expert committees.

The Minister has asked her officials to work on a census plan for folk artists and folk art forms. She has also given orders for the creation of a National Folk Academy in Delhi and capacitation of folk art groups at the grassroots, which means gathering folk artistes and making them proud of the art that they represent. □

''लोकपुरूष – अतुल यदुवंशी''

Hkkjro"k dh jlo.Ur vkj vuudk dykvk d yk[kk & yk[k cuke fo'k"kK vkj fnXxt dykdkjk u n'k dh lLdfr vkj n'ku dk vfoLej.kh; ;kxnku nr g, fo'o e viu n'k dh ,d fof'k"V igpku LFkkfir dhA dkykUrj e xkeh.k tuekul gh ugh oju ij n'k dh thouj[kk ykd&dyk, fuR; ifr ej.kklUu gkrh tk jgh g] fdruh foyIr gk xb vkj fdruh foyIr gku d dxkj ij gA ,l e viuh lkLdfrd /kjkgjk vkj ij[kk dh Fkkrh d iu:RFkku d fy, Jh vry ;nq o'kh th u viuk thou lefir dj fn;k A

Jh vry ;nqo'kh th Lo; ukVdh d tku&eku dykdkj] funi'kd g ftUgku ukVdh dh x< tkudkfj;k viu x:vk Øe'k Jh 'kkfUr Lo:i i/kku ¼bVkok½] jk"Vifr lEeku ikIr Jh jktdekj JhokLro ¼Hknkgh½ ,o Jh eUuk ekLVj ¼cyUn'kgj½ l xg.k dhA blds mijkUr Lo; viuh ukVdh e.Myh ^Lox jxe.My* d ek/;e l mRrj in'k] fcgkj] jktLFkku] xkvk] mRrjk[k.M] mMhlk] pMhx<] fnYyh o e/; in'k vkfn jkT;k d ifrf"Br egkRlok e mRd"V ukVfd;k iLrr dh lkFk gh lkFk jk"Vh; ykdukV; egkRlo 2004 ,o 2006 vUrjk"Vh; Hkkjr jx egkRlo 2002 ,o 2005 rFkk vUrjk"Vh; jxep egkRlo 2004 ykgkj e ukVdh dk Mdk ctku dk dke fd;kA

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक –'अन्धेर नगरी' के नौटंकी रूपांतरित प्रस्तुति, रंग प्रक्रिया और स्वांग के तथ्यों से परिपूर्ण संस्कृत नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' के नौटंकी रूपांतरण की प्रस्तुति, मुंशी प्रेमचन्द की कृतियों ईदगाह, बूढ़ी काकी, पंच परमेश्वर आदि के नौटंकी रूपांतर प्रस्तुतियों मे vry ;nqo'kh th की पैनी दृष्टि ने भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के अनुसार अपने दक्ष निर्देशन के लिए हाथरस, मथुरा के वयोवृद्ध कलाकारों की सलामी व शाबासी प्राप्त की।

लोक कलाकारों के दुःख दर्द को प्रदर्शित करने वाली नौटंकी 'बहुरूपिया' में उनका लोक नाट्य नौटंकी के प्रति अमूल्य अतुलनीय महत्वपूर्ण योगदान प्रस्फुटित हो गया और उन्होनें भारतीय लोककला महासंघ की स्थापना कर सम्पूर्ण भारत के लोक कलाकारों को गांव से दिल्ली तक जोड़ दिया। n'k dh veY; /kjkgjk dk igpkudj mUg cpku dk ldYi] ykddykdkjk e lEeku dh Hkkouk dk ifrLFkkiu vkj ;g ,glkl tkxr djuk fd og ,d egku ijijk d okgd g fuLlng dkb ekeyh dk; ugh gA xkeh.k rFkk lnj {k=k e tkuk] dykdkjk dk ,df=r djuk] mud pgjk ij eLdku Hkjuk] fnXxt vkj cqtx dykdkjk dk ljdkjh ;ktukvk i'ku vkfn l tkMdj mudh c>h gb utjk e jk'kuh txku dk vHkriio dk; Jh vry ;nqo'kh u cMh rUe;rk l fd;k g vkj mudk ;g tTck ykd dyk txr d fy, ,d ,frgkfld dk; gA ftld QyLo:i ,d u; ekgky dk fuek.k gk jgk gA ftle fQj l ykd dyk e.Mfy;k vkj dykdkj tVu yx gA fnXxt vkj ofj"B dykdkj uokdjk vkj viu dfu"Bk dk ykddyk d x.k fl[kku yx gA

vfo'oluh; yfdu lR; mud }kjk vk;kftr jk"Vh; xkf"B;k] eFku f'kfojk e n'k Hkj d dykdkj igpr g vkj eFku dk flyflyk fuckf/k xfr l pyrk jgrk gA ftld ey e gkrh g Jh vry ;nqo'kh dh ij.kk fd ^^viuh ykd dyk dk cpk,] blls igy fd nj gk tk,]** &**"PROTECT OUR FOLK ARTS, BEFORE ITS TOO LATE".**

गौरव बजाज
लोक नाट्य शोधार्थी, निर्देशक एवं कलाकार

SLIPPING GENRE FROM THE LITERARY CLAW: FOLK-TALE NAUTANKI

Dhruva Kumar Singh
D.Phill Scholar
Department of English and Modern European languages
University of Allahabad, Allahabad

North Indian Origin folk-singing tale (Nautanki) and its margin from all traditional genres. In the contemporary scenario, even the term nautanki is being considered as derogatory remark. The Theatrical modern method of proscenium and the most technical mode, which has flabbergasted to the brain seeking flesh-blood Skelton. We all have been told many stories, narrated by our grandmother. Many of them were from mythology and history. Such tales of *Raja-Rani*, *Naag-Nagin* used to fascinate our sensory organs during our childhood.

But now it's holding human interest seems to loosing impressions on human heart, may be the great cause of its replacement due to the coming options of watching live performances in theatre and films. Divisions of society made it sleaze amidst populace. It is only acknowledged that anything which is liked by elite only gets place in the society. It was same thing what happened with nautanki that is why it has been entertaining medium only for vernacular.
Although very few artistes, who are very keen to preserving as well as introducing this powerful entertaining medium to the public by means of supplying social purposes along with aesthetic balm. In which many artistes come forward to support the great literary historical tradition of nautanki.

Atul Yaduvanshi, Allahabad based artist who has contributed a lot to this genre. If we keep eye on this method of entertainment, it had all but died out here, as in other Indian cities ,because of waning audience interest and lack of funds for making it interesting.

The basic element which actually affects audience is its medium which has got some musical quality with dialogue w in folk musical meter. It is needless to say that poetry has quality to purgate emotional tears in the eyes of human meant to be cathartic treatment. Such traditions which have good socio-cultural baggage are losing and cutting fr root tradition which began since when men had been able to keep themselves in the science of language with di discourse of act. It took another direction when the mughal period came into the throne.
Recently issued encounter of *Frontline* journalist Rana Siddiqi Zaman with Atul Yadvuanshi, who is rejuvenat the traditional natuanki and trying it to reflect the mirror of character into the audience packed auditorium. I would like to quote excerpts written in the magazine. "In Pre-Independence India Nautanki was used to spread messages of patriotism. Between 1924 and 1936, it was banned in Allahabad. Jawaharlal Nehru was deeply interested in the theatre form. During one of his stint in jail, he met Ram Das Tripathi, a well known Nautanki director from Allahabad. They became friends, and Nehru started calling puon folk theatre directors/ artistes to spread the message of nationalism. Nautanki groups would help to collect audiences when nationalist leaders delivered speeches at public meetings. There is a story of how Kamala Nehru ,while addressing one such meetings where the audience was gathered by Nautanki groups ,was taken off the podium by troops who pulled her by the hair. The incident is mentioned in a report in *Suraji Ranbheri*, which was published by the Department of Culture and the Department of Information, Uttar Pradesh, on the occasion of the 40th anniversary of India's Independence. The area where this happened started being called Kamla Nagar by its residents. Later, Nautanki also formed the basis of Bollywood cinema; with song and dance sequences woven into the narrative..."

7

INTANGIBLE CULTURAL HERITAGE PROGRAMME

Researched by : SWARG-Allahabad in an active support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
LATE CITY | CHANDIGARH | FRIDAY | SEPTEMBER 5 | 2008 | 32 PAGES | Rs 2
www.expressindia.com
Daily from AHMEDABAD | CHANDIGARH | DELHI | JAMMU | KOLKATA | LUCKNOW | MUMBAI | NAGPUR | NEW YORK (WEEKLY) | PUNE | VADODARA

Rhyme & Rhythm

Nautanki is the most communicative of theatre forms, Atul Yaduvanshi on Andher Nagri

PHOTO: JAIPAL SINGH

PARUL

HE wants the world to see and appreciate a form of theatre that cannot be adapted or translated, for it's so unique and exclusive. "Nautanki," pronounces Atul Yaduvanshi of Swarg Rangmandal, who's here with Andher Nagri for the National Theatre Festival. Based in Allahabad, Atul is associated with SWARG, an NGO and his journey of theatre began from there, when they started performing street plays to create awareness on many social issues like HIV-AIDS, maternal health, child care etc. "And after some time, when we had built a team of talented people, we decided to do stage shows, and Nautanki was the only choice, for it's the most communicative of all theatre forms," Atul took Batware Ki Aag all over India, including the Bharat Rang Mahotsav and it was a hit all the way. While usually a nautanki comprises folklore and mythological dramas with interludes of folk songs and dances, it has now taken other forms, with verse being an integral part of it. The prominent musical instruments are the nagada, sarangi, harmonium, dholak. "If an actor can be a part of nautanki, he can perform anywhere in the world. The story-telling format and the poetry, an integral part of Nautanki makes it so rhythmic and rooted," Atul says Nautanki is the base for film-making.

Over the years, Nautanki has absorbed a number of influences, yet the rooted, raw earthiness is a natural ingredient of this theatre form. "Dance, music, poetry, there's so much scope for improvisation, exploration and vibrancy and huge backdrops form an integral part of the set design in Nautanki," says Atul.

As for Andher Nagri, Atul says though many directors have staged the play and portrayed the king as corrupt, his take is that of brain-drain. "We develop capacities and give opportunities and they serve other nations. What's unique about this play is that at any given time, in any corner of the world, the theme of this play is applicable and important," Atul gets back to the stage.

PHOTO: JASBIR M

FRIDAY, SEPTEMBER 5, 2008

Hindustan Times

hindustantimes.com

NEW DELHI • CHANDIGARH METRO • RS 2.00

Play brings folk art to centre stage

Nonika Singh
Panchkula, September 4

FOLK ART of *nautanki*, Bhartendu Harishchandra's famous play *Andher Nagri* topped with some theatre of absurdity! And what do you get? Interestingly it was a concoction that despite odds and some limitations worked rather well. On the second day of the National Theatre Festival, young director Atul Yaduvanhsi breathed new life and vision not only into the good old nautanki but also in the eternal tale once penned by Bhartendu.

Of course the play as conceived by Atul was essentially a musical. But for a dialogue here and there, all narration was in verse form. And the start of the play may not have been so startling but soon especially after the arrival of the nincompoop Raja essayed by Atul himself, the play picked up momentum and also humour. Comic were the interludes involving his convoluted sense of justice (an uncanny reminder to present times) in which none but the common man suffers. Herein in unfolding of bizarre but funny moments one odd scene made one squirm and wonder poetic licence in theatre can be taken to what extent?

Nevertheless the comedy angle gelled and above all didn't lose the real sting of the theme. The blame game passing of the buck to the most innocent and finally the triumph of wisdom all made pertinent points. Performers moreso Gaurav Bajaj and Atul were consummate and directorial skill lay in blocking and freezing of movements.

On the hi-tech visual support one had reservations. For the scenic locales depicted on the large screen were at best fillers not the props that spoke in its own language. But the play sure had its own communicable rhythmic resonance and connected resoundingly.

Atul Yaduvanshi wants to take UP's lost folk theatre to the world

Nautanki returns

Nonika Singh

'Real Nautanki vanished decades ago. What has existed is only a perverse version". As this realisation sunk into young Allahabad-based theatreperson Atul Yaduvanshi, he took it upon himself to resurrect the dying folk art.

Today, as his play steeped in Nautanki finds receptive audiences at Bharnagam, Delhi, Mhow Festival and World Performing Arts Festival, Lahore, Atul is determined it put Nautanki on the world map. Alongside, he nurses the dream of setting up an international academy of performing arts where *dholak* players and *nagara* exponents would be lecturers.

Atul is without a degree in theatre. "Theatre is the art of exposure," he says. No. He isn't afflicted by the we-are-the-best syndrome. "Even the man in the backseat can possibly know more about theatre through his experiences than me".

So Atul has trained himself in the laboratory of life. Of course, to study the folk form of Natunki, he visited the hinterland of UP, interviewed hordes of performers to devise his own technique. Yet the play that he brings to the National Theatre Festival is the tried and tested Bhartendu's *Andher Nagri*. "My presentation is different though I have not changed the text. Yet the hidden subtexts suggest modern issues like brain drain".

Atul, who runs an NGO called Swarg and whose offshoot is his theatre group Swarg Rangmandal, is adamant. "Theatre must have a purpose," he says. Though he is all for theatre of the absurd, Atul feels brakes must be applied to ludicrous experimentation. In this art of make-believe, he argues, "A fine blend that appeals to both heart and intellect." But can his theatre swathe in colours of folk form strike a chord with urban audiences? He tells us of Goans, Pakistanis and even Delhites going ga-ga over *Batware Ki Aag* during several festivals.

So how significant are festivals? "Very. But I consider festivals such as NFT essentially establishment-oriented. Not organised from an artiste's point of view. I guess the suffix festival ought to be dropped. These are just about Come, Perform and Go. No interaction amongst the groups".

nonikasingh1@rediffmail.com

SANT ARORA

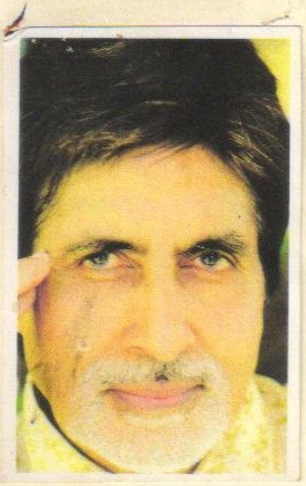

Amitabh Bachchan

MESSAGE

It is indeed a matter of great pride and honour for us Indians to learn that the 'SWARG' Repertory, has been selected to represent India by presenting the famous Nautanki "Batwaare Ke Aag" at the **World Performing & Visual Arts Festival-2004"** being organized at Lahore, Pakistan from 26th November 2004 to 7th December 2004,

It is also heartening to learn that the Department of Culture, Government of India has justifiably recognized the noteworthy efforts of 'SWARG' to promote classical Nautanki and thereby help woo cross culture confluence.

The promotion of events such as this will definitely help highlight the inherent strengths of the rich Indian traditions and take the great Indian dream to various walks of life.

Congratulations "SWARG", we are proud of your accomplishments and achievements. May your efforts to promote traditional folk drama exceed all expectations and provide further impetus to our inherent culture and ethos.

With best wishes,

Amitabh Bachchan

amb:pd:jalsa

Pratiksha Juhu Mumbai 400 049

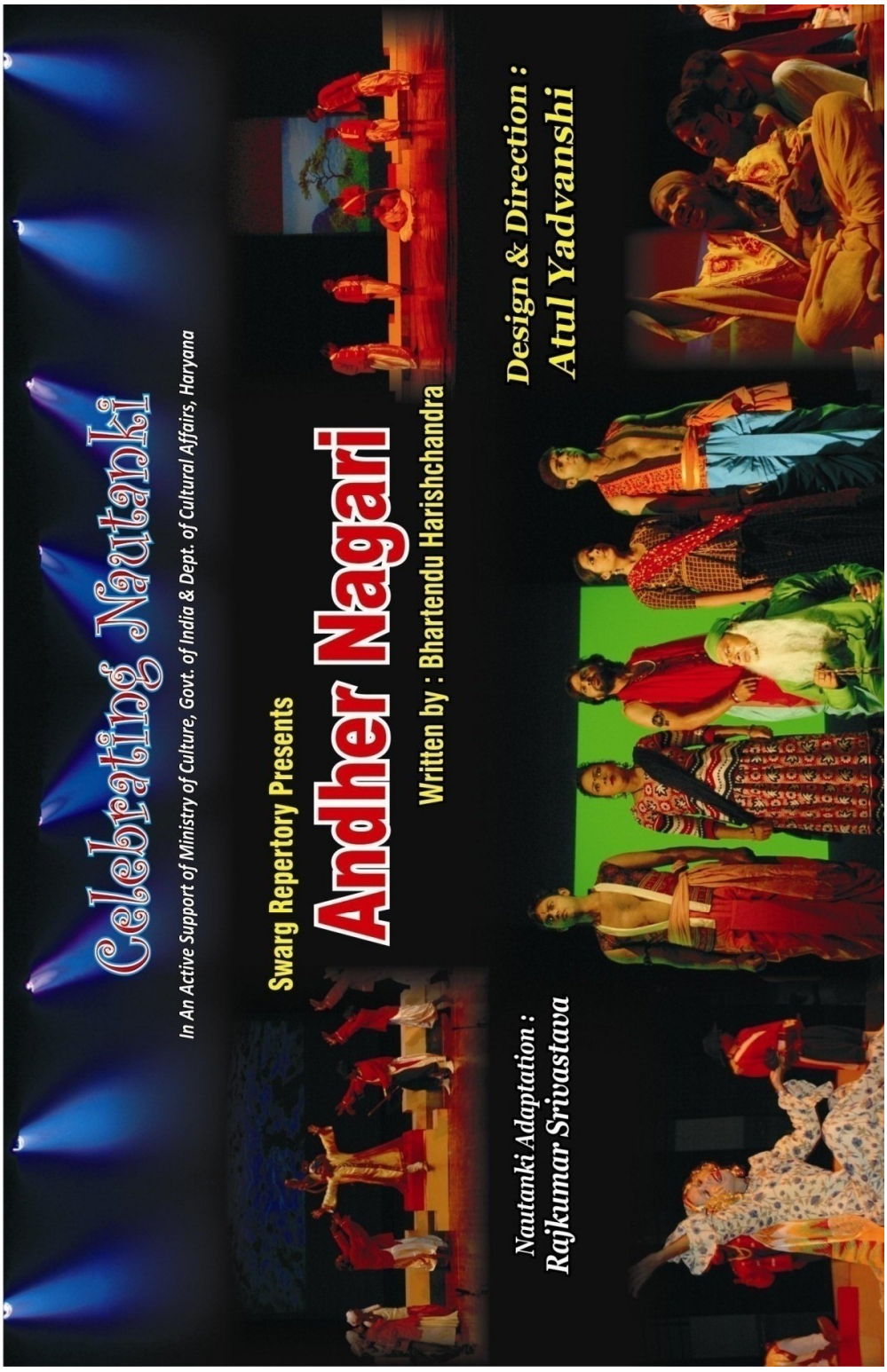
Celebrating Nautanki
In An Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India & Dept. of Cultural Affairs, Haryana
Swarg Repertory Presents
Andher Nagari
Written by : Bhartendu Harishchandra
Design & Direction :
Atul Yadvanshi
Nautanki Adaptation :
Rajkumar Srivastava

:-Written By-:
Bhartendu Harishchandra
ANDHER NAGARI
:-Nautanki Adaptation-:
Rajkumar Srivastava
Concept Design & Direction-: Atul Yadvanshi

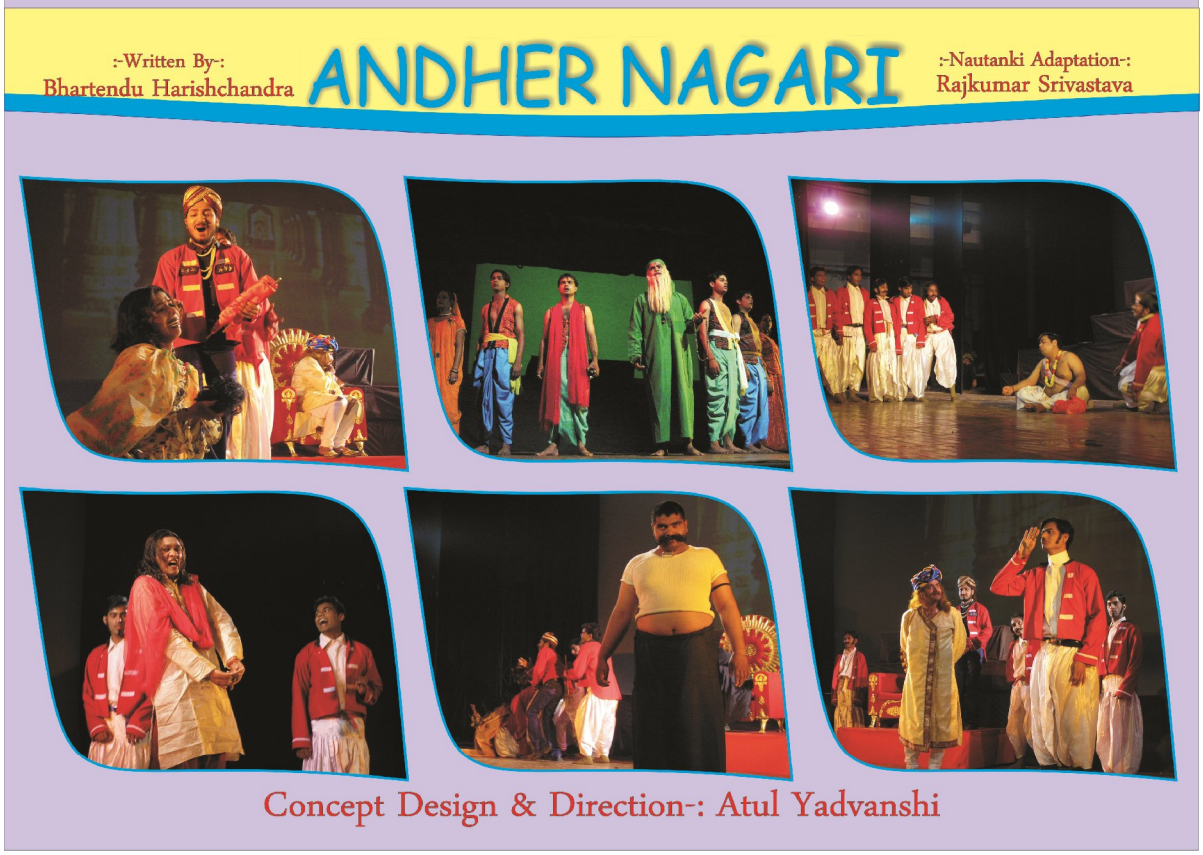
:-Written By-:
Bhartendu Harishchandra
ANDHER NAGARI
:-Nautanki Adaptation-:
Rajkumar Srivastava
Concept Design & Direction-: Atul Yadvanshi

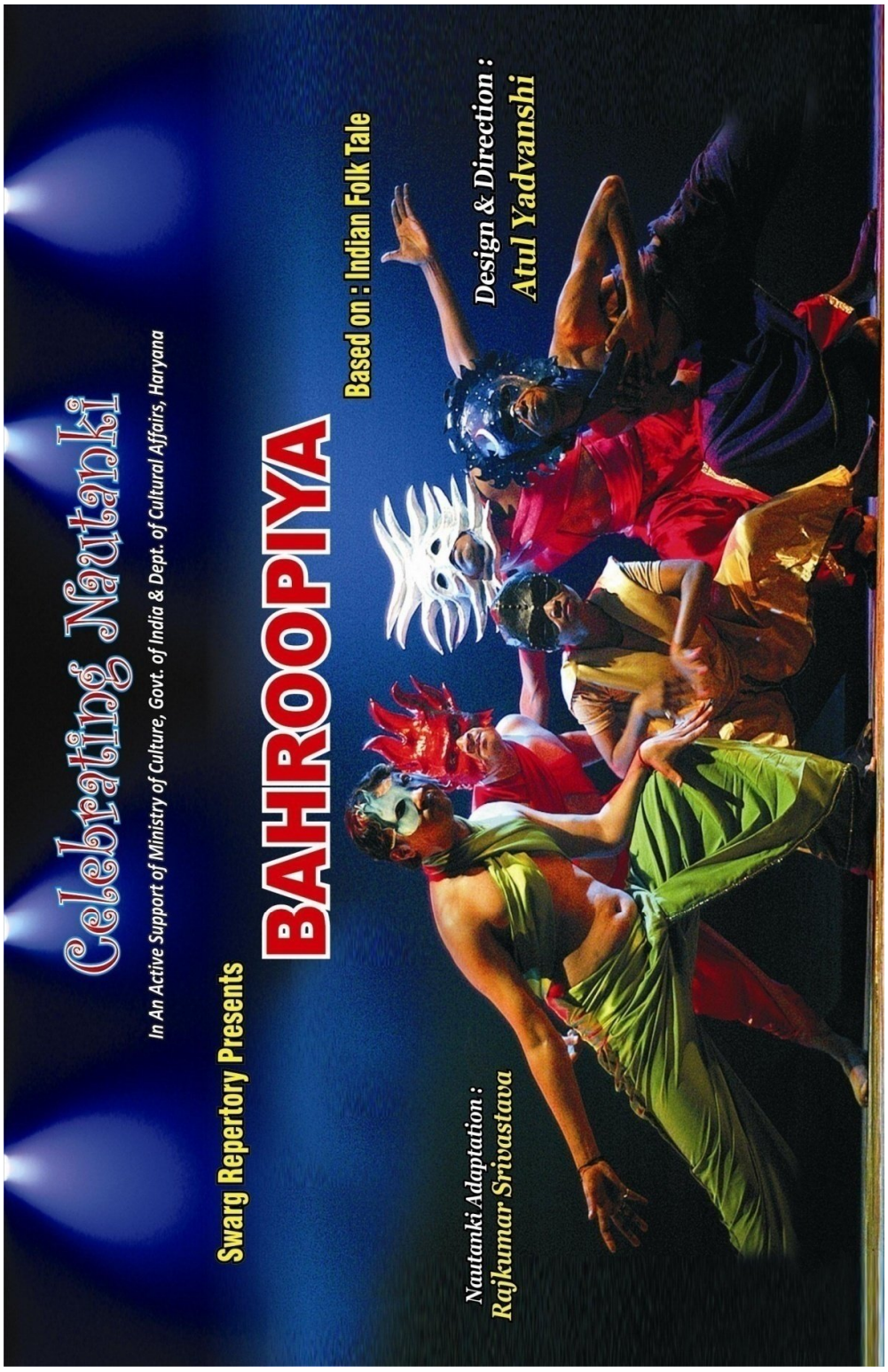
Celebrating Nautanki
In An Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India & Dept. of Cultural Affairs, Haryana
Swarg Repertory Presents
BAHROOPIYA
Based on : Indian Folk Tale
Design & Direction :
Atul Yadvanshi
Nautanki Adaptation :
Rajkumar Srivastava

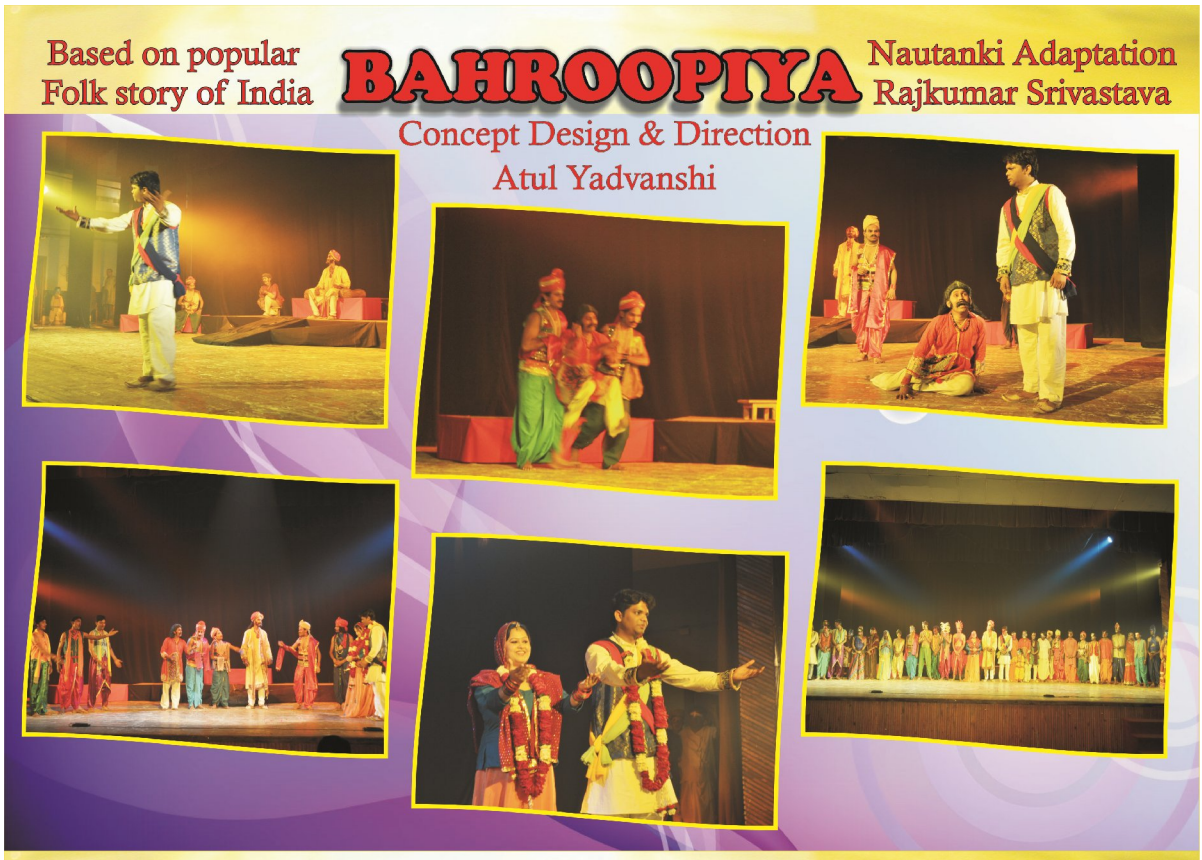
Based on popular
Folk story of India
BAHROOPIYA
Nautanki Adaptation
Rajkumar Srivastava
Concept Design & Direction
Atul Yadvanshi

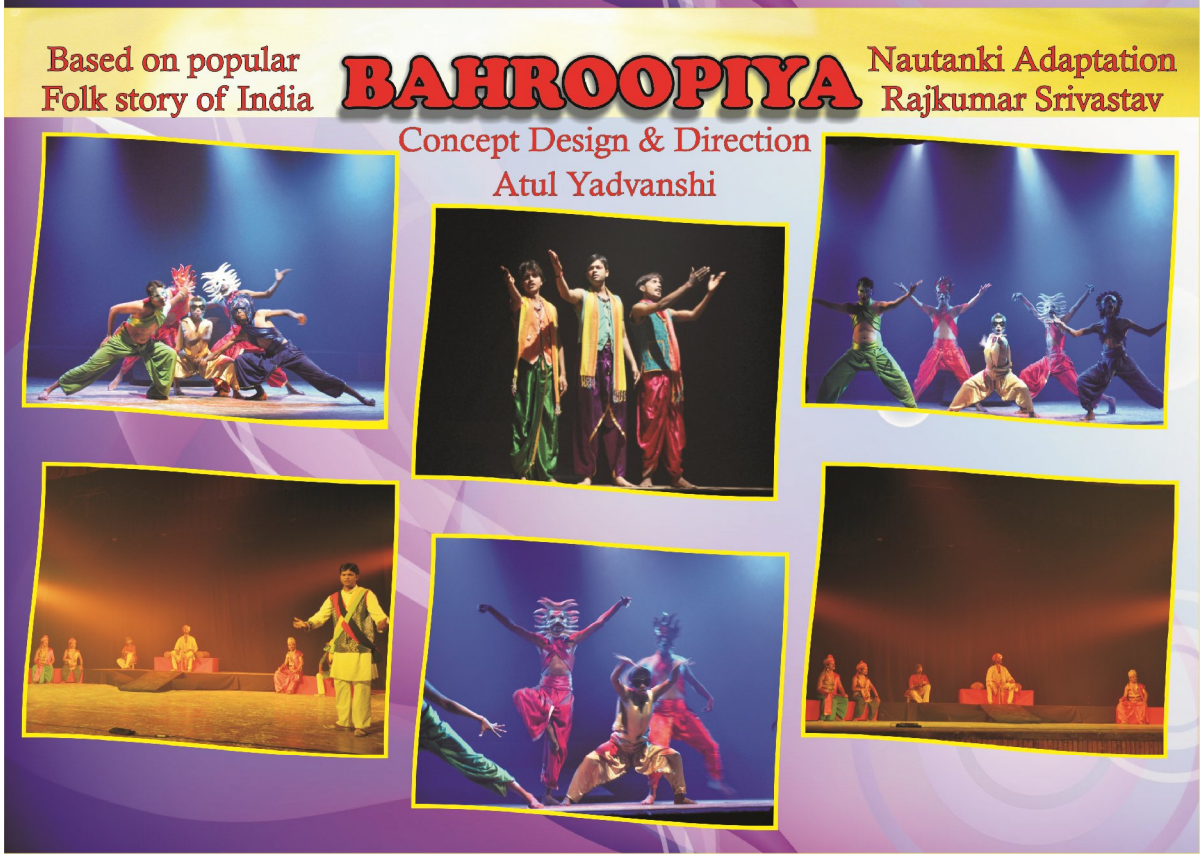
Based on popular
Folk story of India
BAHROOPIYA
Nautanki Adaptation
Rajkumar Srivastav
Concept Design & Direction
Atul Yadvanshi

Celebrating Nautanki
In An Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India & Dept. of Cultural Affairs, Haryana
Swarg Repertory Presents
Malvikagnimitram
A play by Kalidasa Retold
Nautanki Adaptation :
Rajkumar Srivastava
Design & Direction :
Atul Yadvanshi

MALAVIKAGNIMITRAM

Written By :- Mahakavi Kalidas

Nautanki Adaptation-:Rajkumar Srivastava

Concept Design & Direction:-Atul Yadvanshi

MALAVIKAGNIMITRAM

Written By :- Mahakavi Kalidas

Nautanki Adaptation-:Rajkumar Srivastava

Concept Design & Direction:-Atul Yadvanshi

Celebrating Nautanki
In An Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India & Dept. of Cultural Affairs, Haryana
Swarg Repertory Presents
Panch Parmeshwar
Written by : Munshi Premchand
Nautanki Adaptation :
Rajkumar Srivastava
Design & Direction :
Atul Yadvanshi

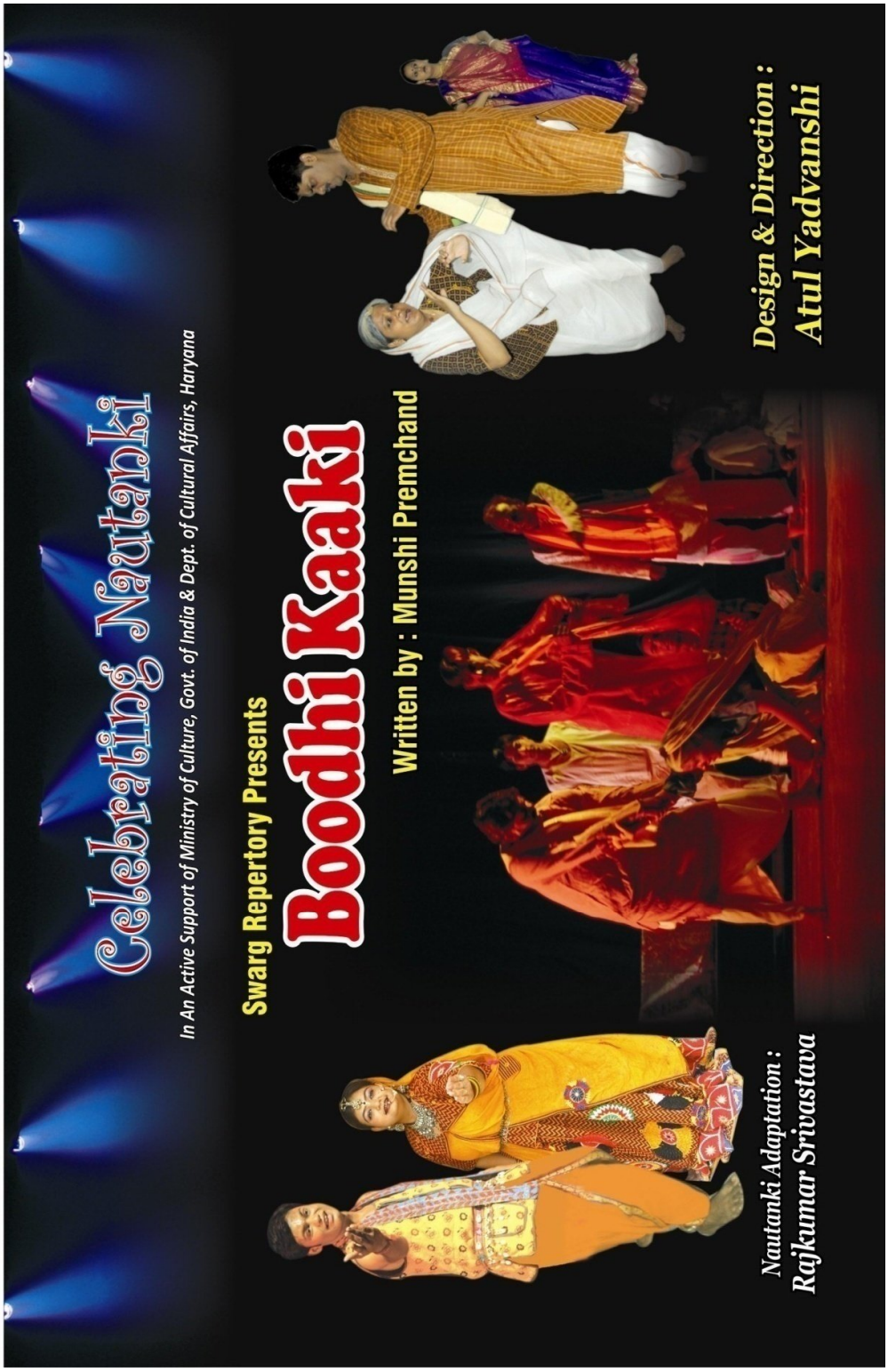
Celebrating Nautanki
In An Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India & Dept. of Cultural Affairs, Haryana
Swarg Repertory Presents
Boodhi Kaaki
Written by : Munshi Premchand
Design & Direction :
Atul Yadvanshi
Nautanki Adaptation :
Rajkumar Srivastava

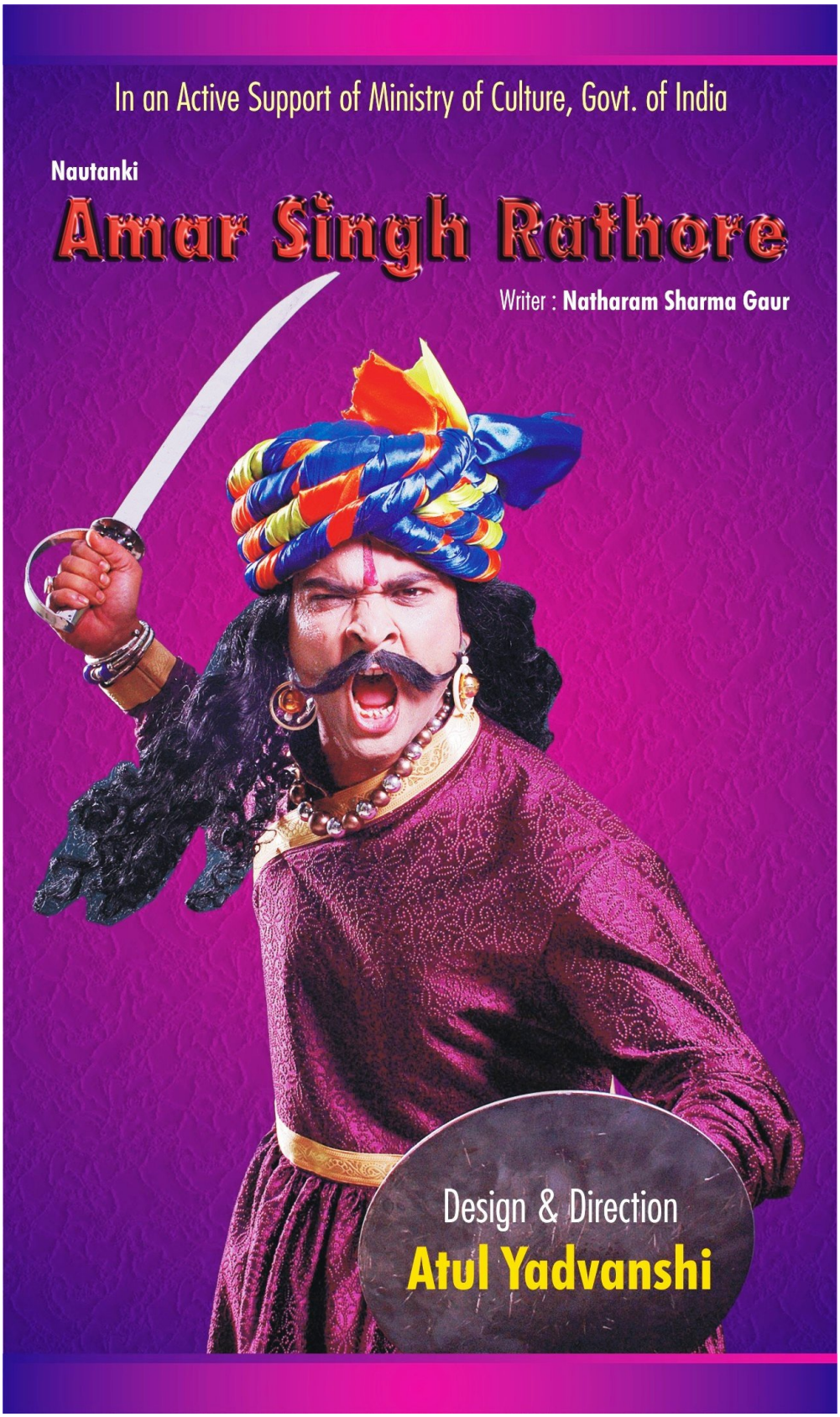
In an Active Support of Ministry of Culture, Govt. of India
Nautanki
Amar Singh Rathore
Writer : Natharam Sharma Gaur
Design & Direction
Atul Yadvanshi

किस्सा–ऐ–नौटंकी

- *लोकमंच या लोकनाट्य लोक साहित्य का ही एक रूप है। लोकमानस की कथावस्तु पर आधारित, संगीत एवं अभिनय से युक्त यह लोकमंच सदैव से लोकप्रिय रहा है, लोकमानस को रागाचित करता रहा है। लोक कथा, लोक संगीत लोक भाषा से युक्त लोकनाट्य किसी अखाड़े से सम्बद्ध होकर गुरू शिष्य परम्परा में पोषित होकर जनमानस में आज भी अपना स्थान बनाये हुए हैं। रास नाट्य, हास्य नाट्य, नौटंकी, स्वांग, भगत, माच आदि इसी लोक नाट्य के विविध स्वरूप हैं।*

- भगत, रास, रासक, रहस, स्वांग और स्वांग सपेड़ा के क्रमशः सोपानों को पार करते हुए लोक नाट्य के विस्तृत स्वरूप को मुल्तान के एक बादशाह की शहजादी नौटंकी की गाथा की प्रस्तुति ने उपरोक्त लोकनाट्यों के साथ नौटंकी का संबोधन भी दिला दिया। नौटंकी शहजादी की गाथा, पंजाब, सिंध, गुजरात, राजस्थान, इलाहाबाद हाथरस, मथुरा, वाराणसी, कानपुर में जन–जन में प्रसारित थी। राजस्थानी लोकगाथाओं में 'फूलन दे रानी' पंवाड़ा, सिंध और उत्तर प्रदेश में इसकी गाथा शहजादी नौटंकी के नाम से है। शहजादी नौटंकी फूल की भांति थी तथा फूलों से नित्य तौली जाती थी कदाचित इसीलिए उसका नाम फूलन, फूलपंच आदि था। लोकनाट्य विद् राजकुमार श्रीवास्तव के अनुसार उसे नौ सिक्कों और फूल से तोले जाने की बात सार्थक प्रतीत होती है। उपरोक्त तथ्य कैलिर्फोनिया विश्वविद्यालय की डॉ0 हैन्सन कैथरीन ने अपने शोध में भी लिखा है।

- *इतिहास इस बात का साक्षी है कि मध्य काल की भगत परंपरा में विशेष विकास हुआ। कुछ लोग विविध रूप एवं वेश–भूषा धारण करके स्थान–स्थान पर शासकों एवं प्रजा का मनोरंजन करते थे, जिसके बदले में कुछ न कुछ उन्हें पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हो जाता था। कुछ शासकों ने तो ऐसे लोगों से प्रसन्न होकर उन्हें भवन और भूमि तक उनके नाम लिख देते। अबुल फजल ने अपनी पुस्तक 'आयने अकबरी' में तत्कालीन दो परंपराओं कीर्तन और भगत का उल्लेख किया है। भगतियों के विवरण में उन्होनें लिखा है, ''ये चिकने–चुपड़े मुख वाले सुन्दर लड़कों को स्त्री–पुरूष का वेश बनाकर गवाया–नचाया करते हैं।'' आयने अकबरी से ही ज्ञात*

होता है कि उस काल में भगत परंपरा के खेल मंदिरों में होते थे। ये लोग भक्ति और शौर्य का स्वांग भर कर नकलों में हास–परिहास करते थे।

- औरंगजेब के काल में प्रश्रय न पाने के कारण ये खेल यदा–कदा ही दिखाई पड़ते थे। सन् 1685 ई0 में मौलाना मोहम्मद अकरम गनीमत ने अपने ग्रंथ 'नौरंगे इश्क' में भगतियों का उल्लेख निम्नवत किया है – *''आज शहर में अजब किस्म के लोग आए हैं जो एक मौजो साज अंदाज के साथ नकलें करते हैं और नग्मों साज के साथ खेल दिखाते हैं। नाज और नकल के ये उस्ताद हैं। इनकी आवाज भी मीठी है। हमारी भाषा में इन्हें भगतबाज कहते हैं। ये कभी मर्द कभी औरत और कभी बच्चों की नकली करते है, कभी परेशान हाल सन्यासी बन जाते हैं, कभी मुसलमान, कभी कश्मीरी का भेष बना लेते हैं और कभी फिरंगी (अंग्रेज) बन जाते हैं। कभी दाढ़ी मुड़ाकर स्त्री की सूरत नजर आते हैं, कभी मुगलों की शक्लें लेते हैं, कभी गुलाम बन जाते हैं, कभी जच्चा बन जाते हैं जिसका बच्चा दादा की गोद में खेलता है।''*

- ***दिल्ली में बारहवीं सदी हिजरी में तकी नाम के भगतिया उस्ताद का भी उल्लेख कहीं–कहीं प्राप्त होता है। औरंगजेब काल से लुप्त भगत परंपरा का इतिहास पुनः सन् 1827 में अमरोहा से 'रूप बसंत' के रूप में आगरा से प्रारंभ होता है –***

अमरोहा खारी कुआँ चौरासी की साल,
नया स्वांग परगट किया बिशन बिरहमन लाल।

- अमरोहा से पंजाब और पुनः मथुरा में यह परंपरा कामा (कामवृन) से देविया घटिया द्वारा आयी। मथुरा का पहला अखाड़ा लाल दरवाजे पर उस्ताद् मनिया भट्ट की कलाप्रियता से लोकप्रिय हो उठा। भरतपुर में अंग्रेजों से संघर्ष के पूर्व भरतपुर (ब्रज) के एक नमक दरोगा बाबू श्याम चरण ने इसमें संगीत जोड़ कर इसकी सम्प्रेषणीयता में वृद्धि की।

- ***भगत लीला के मथुरा में पुर्नस्थापन के सम्बन्ध में एक जनश्रुति है– ''1857 की क्रांतिकाल में मथुरा के जिलाधीश ने पेशकार भगवती प्रसाद कायस्थ को धन का लालच देकर सरकार के पक्ष और जनता को विलासिता से सराबोर करने वाली भगत लीला लिखने को प्रेरित किया। फलस्वरूप उन्होंने 'सब्ज परी स्वांग' लिखा जिसमें अंग्रेजों की प्रशंसा की गई थी। भगवती प्रसाद कलंगी पार्टी के उस्ताद होने के साथ संगीत के भी विद्वान थे। उन्होंने नक्कारे***

पर 'सब्ज परी' की सफल प्रस्तुति प्रदर्शित करके जनता की मानसिकता परिवर्तित करने के साथ अंग्रेज सरकार से दस हजार रूपया भी प्राप्त किया। प्रतिक्रिया स्वरूप शहर के तुर्रा मंडली वालों ने भी अंग्रेजों की सहायता से 'लाल परी' लिख कर दस हजार रूपया प्राप्त किया। इन खेलों से क्षुब्द क्रांतिकारियों ने खेल प्रस्तुत करते समय एक दिन भगवती प्रसाद को मंच पर ही गोली मार दी जिससे भगतियों की भगतलीला ठप्प हो गयी। इस घटना के सात–आठ वर्ष बाद लगभग सन् 1866 ई0 से उस्ताद मनिया द्वारा भगत लीला की पुनः स्थापना हुई।

- लोकनाट्य परंपरा से प्रभावित अंग्रेजों ने अपने मनोंरंजन हेतु अंग्रेजी नाटकों को खेलना आरंम्भ किया। अंग्रेजों की इसी प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय राजा भी इस ओर जुड़े। महारानी लक्ष्मीबाई के पति झांसी नरेश गंगाधर राव तथा अन्य नरेशों की रंगशालायें इसी काल में बनीं। अवध में नवाब वाजिद अली शाह ने भी अपने को नृत्य–नाट्य के प्रति समर्पित किया। अपनी युवावस्था में ही उन्होंने रहस परंपरा की ही भांति 'राधा–कन्हैया' का किस्सा लिख कर स्वयं खेला।

- *रासधारियों से प्रभावित दानलीला के पारंपरिक कथानक और अपभ्रंश से जुड़ी नवाब की रहस लीला ने स्वांग परंपरा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने शासन काल में ही उन्होंने केसरबाग में 'रहस मंजिल' की स्थापना करायी थी। उनके परीखाने में 216 रहसवालियॉ थी जिनकी तनख्वाह 1558 रूपया और उस्तादों की तनख्वाह 3261 रूपया माहवार व्यय होता था। सन् 1853 में अमानत ने 'इन्दर सभा रहस' लिखा किन्तु कतिपय कारणों से उन्होंने अपना छन्द नाम 'उस्ताद' ही रखा।*

- वाजिद अली शाह द्वारा 'रहस नैया' खेल लिखने के साथ हकीम असगर अली खान ने नवाब की लिखी मसनवियों को क्रमवार करके 'मसनवी दरियाये तास्तुक' लिखा। जिसके पूर्वोभ्यास में एक वर्ष और 12 लाख रूपये खर्च हुआ। अमानत के 'इन्दर सभा रहस' से प्रभावित होकर नवाब ने रहस मेहर उल्फन लिखा जिसे उनके शिष्य आबिद अली इबादत ने सन् 1855 में प्रदर्शित किया।

- *नौटंकी, स्वांग या सांगीत लोक वार्तापरक एवं लोक मानसिकता की संगीतात्मक, गेय व अभिनय मूलक अभिव्यक्ति है। स्वांग लोकनाट्य की परम्परा अत्यधिक प्राचीन रही है। डॉ0*

श्याम परमार 9 वीं शताब्दी में इसके अस्तित्व को स्वीकारते है। ब्रज स्वाँग उसी परम्परा का एक नवीनीकृत रूप है। अभिनय एवं गेयता अर्थात् स्वाँग + गीत मिलकर 'साँगीत' शब्द को अस्तित्व व महत्व प्रदान करते हैं जो स्वाँगें संगीत की प्रधानता का परिचायक है। लोकवाद्य नगाड़े की फड़कती ताल पर अभिनय एवं संगीत की थिरकती स्वर लहरी से परिपूर्ण 'स्वांग' या सांगीत' लोक मानस की धड़कन के रूप में जनमानस को लुभाता रहा है। उस्ताद 'इन्दरमन' अखाड़े की परम्परा में हाथरस के पं0 नथाराम गौड़ स्वांग सांगीत के रचयिता, गायक व अभिनेता थे जिनके नाम की बुलन्दी आज भी आकाश को स्पर्श करती प्रतीत होती है। 'सुरसरि सम सब कहें हित होई' की भावना से आपूरित हो जनमानस का रंजन करती हुयी न केवल ब्रज क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण भारत में प्रवाहमान है। हाथरस की प्रमुख नौटंकीयों में सत्यहरिशचन्द्र, अमरसिंह राठौर, भक्त पूरनमल, लैला मजनूं आदि रही।

- हिन्दी साहित्य के इतिहास में दो भाइयों ललित किशोरी, ललित माधुरी का नाम आता है जिनका वास्तविक नाम शाह कुंदनलाल, शाह फुंदन लाल था, दोनों नवाब वाजिद अली शाह की रहस लीला के वस्त्राभूषण के अधिकारी थे। नवाब के कलकत्ता जाने के पश्चात् दोनों भाई वृन्दावन पहुँच जाहरमल की मंडली के वस्त्राभूषण प्रबंधक बन गए। दृश्यों की वास्तविकता के लिए तत्कालीन कलाकार बहुमूल्य रत्न जड़ित वस्त्र और आभूषण पहना करते थे। गोपीचंद खेल में रखे गए हुक्के की कीमत उस समय आठ हजार रूपए थी। इसी खेल में गोपीचंद बना पात्र 'उतारू' के स्थान पर 'जराऊ' बोल गया - *'उतारू राजसी कपड़े रमाऊं भस्म निज तन में'*। जाहरमल उलझन में पड़ गए किंतु शाह भाइयों ने संकेत से वस्त्र जलाने की अनुमति दे दी, देखते ही देखते मंच पर रत्न जड़ित हजारों रूपए के वस्त्र राख हो गए।

- *कैलिर्फोनिया विश्वविद्यालय के डॉ0 कैथरीन के शोध से खुशीराम द्वारा लिखित ''सांगीत रानी नौटंकी का'' वाराणसी से 1882 में प्रकाशित होने का तथ्य प्राप्त होता है जिसको सर्वप्रथम प्रयाग के लाला कल्याणचन्द्र जी ने प्रस्तुत किया। लाला कल्याणचन्द्र जो कि मूलतः इलाहाबाद से थे मथुरा में उस्ताद मनिया से भगत लीला सीखी और उन्हीं की मंडली से प्रस्तुतियां भी करते थे। बाद में अपने निवास स्थान इलाहाबाद लौटकर भगत और सांगीत की प्रस्तुतियों से ख्याति पाई । मोतीलाल नेहरू जी ने लाला कल्याणचन्द्र से ग्रामीण क्षेत्रों मे*

नौटंकी के माध्यम से स्वाधीनता संबंधी जागरूकता प्रसारित करने का आग्रह किया जो लाला कल्याणचन्द्र जी ने स्वीकार कर लिया और तन–मन धन से स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े।

- लोकनाट्य विद् राजकुमार श्रीवास्तव ने समाचार पत्र पत्रिकाओं विशेष रूप से नौटंकी **कला पत्रिका** (1983) के इलाहाबाद विशेषांक से नौटंकी के इलाहाबादी रंग के मूल में विस्तृत वा गहन सर्वेक्षण, साक्षात्कार के द्वारा विभिन्न जातिगत लोकनाट्यों पंवारा, करिंगा, दारागंज के स्वांग, पंडित बिरजू महाराज की मूल भूमि सैदाबाद की कथिक परंपरा, भदोही, वाराणसी की मूल परम्परा तथा पारसी रंगमंच के गीत नाट्य नौटंकी रहे हैं। इलाहाबाद मे सइदागंज, मोहमजिया, गधियॉव, मुन्डेरा, फाफामऊ, शाहगंज, सुलेम सरॉय, नीवां, सहसो, फूलपुर आदि स्थानो मे सन् 1901 के पूर्व नौटंकी परम्परा थी। आकाशवाणी इलाहाबाद द्वारा प्रसारित रूपक "***नौटंकी इलाहाबाद की***" इसका प्रमाणित उदाहरण है।

- *पं0 रामराज त्रिपाठी जी ने अपने गुरू लाला कल्याण चन्द जी के देहावसान के बाद श्रीराम सांगीत मण्डली का गठन कर प्रस्तुतियां आरम्भ की। इलाहाबादी नौटंकी के विषय मुख्यतः समकालीन रहे और यह दस्तूर आज भी जारी है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पहले पं0 मोती लाल नेहरू और बाद में जवाहर लाल नेहरू व लाल बहादुर शास्त्री जी नौटंकी कलाकारों को निरन्तर प्रोत्साहन, संरक्षण एवं संवर्द्धन प्रदान करते रहे। इलाहाबादी नौटंकी ने बढ़ चढ़कर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और इसके कलाकार अक्सर प्रशासन द्वारा प्रतिबंधित कर दियें जाते थे। कई कलाकारों ने आजादी की लड़ाई में शहादतें दी। नौटंकी के प्रख्यात कलाकार जगेश्वर सैदाबाद में पुलिया उड़ाने के प्रयास में अंग्रेजों की गोली से शहीद हुए। इलाहाबादी नौटंकी जो प्रमुख रूप से मंचित होती थीं उनमें 'मॉ जंजीरों में', प्रताप का विलाप', वीर बालक', भक्त प्रहलाद (क्रान्ति के प्रसंग मे) सुल्ताना डाकू', आजादी के दीवाने' आदि ....*

- कानपुरी नौटंकी के संस्थापक पं0 कृष्ण पहलवान (1966-67) मे संगीत नाटक अकादमी सम्मान) ने इलाहाबाद के पं0 रामराज त्रिपाठी जी के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इस प्रकार नौटंकी ने आजादी की लडाई मे बढ–चढ कर भाग लिया जिसमे जुल्मी डायर, खूने नाहक बलिया का बलिदान असहयोग चटनी (सात भाग) आदि नौटंकी प्रमुख रूप से मंचित होती थीं ।

- *जवाहर लाल नेहरू जी जब भी इलाहाबाद प्रवास करते थे तो राम राज त्रिपाठी अपनी नौटंकी खेला करते थे और प्रातः प्रस्तुति के बाद नेहरू जी जनता को सम्बोधित करने जाया करते थे। एक बार की घटना है जब पं0 रामराज त्रिपाठी जी ने पं0 नेहरू जी से बात करके नौटंकी की तिथि बहरिया विकास खण्ड में निश्चित करने के उपरान्त खेल प्रारम्भ कर दिया लेकिन किसी कारण वश पं0 नेहरू को लखनऊ जाना पड़ा इसलिए उनके स्थान पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमति कमला नेहरू उपस्थित जनमानस को संबोधित करने पहुँची। वहाँ घोड़े पर सवार अग्रेज अफसर के निर्देश पर सिपाहियों ने कमला जी को बालों से पकड़ कर नीचे घसीट लिया जिससे वह मंच से नीचे आ गिरीं। उपस्थित जनमानस में भगदड़ मच गई लेकिन श्रीराम सांगीत मण्डली के कलाकारों (क्रांतिकारी) विशेषकर रजऊ पॉडे व राजाराम पॉडे ने पडिला स्थित सरकारी मालगोदाम में आग लगा दी। इसके बाद अंग्रेजों ने नौटंकी पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया। बाद में जवाहर लाल नेहरू स्वयं कचेहरी में कलेक्टर से मिले और प्रतिबंध हटवाया। (1924–1936 तक नौटकी प्रतिबंधित) बकौल जय–जय राम त्रिपाठी (पुत्र– स्व0 रामराज त्रिपाठी) ''एक बार स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में लाल बहादुर शास्त्री जी 3 माह तक गुप्त रूप से श्रीराम सांगीत मण्डली के कलाकारों के साथ रहे।*

- स्वाधीनता संग्राम की कोकिल कंठी एवं इलाहाबादी नौटकी की दिग्गज कलाकार हबीबुन बाई को जवाहर लाल नेहरू जी ने कोकिला बाई का खिताब दिया था।

- *सन् **1933-34** के आस पास महिला कलाकारा के रुप में सर्वप्रथम हबीबुन उर्फ कोकिला बाई इलाहाबदी नौटंकी के मंच पर आयी। इसके पूर्व पुरुष ही नारी पात्र का अभिनय करते थे। पुरुष कलाकारों के कथक नृत्य ने महिलाओं से अधिक ख्याति अर्जित की थी। सरकार ने जब वेश्या उनमूलन किया तो अनेक वेश्याओं के जीवन यापन की उचित व्यस्था न होने से उन्होंने नौटंकी का सहारा लिया जिससे माहैल इतना गन्दा कि नौटंकी के जाने माने कलाकारों ने इस क्षेत्र से सन्यास ले लिया।*

- नौटंकी को ताउम्र सम्पर्पित रहने वाली गुलाब बाई को भारत सरकार ने जनवरी नब्बे में पद्मश्री से सम्मानित किया। इसी नौटंकी के चलते उन्हे उत्तर प्रदेश सरकार ने भी सम्मानित और पुरस्कृत किया, इसी नौटंकी के चलते तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री आर.

वेंकटरमन जी जब उपराष्ट्रपति थे तब उन्होंने गुलाब बाई का नागरिक अभिनन्दन मद्रास में कराया था और दस हजार रूपये का पुरस्कार भी दिलाया।

- *प्रमाणिक शोध अध्ययन हेतु तत्सम्बन्धित विषय के पूर्व में लिखे गए साहित्य के साथ समाज में बिखरी जानकारी के सर्वेक्षण व साक्षात्कार की आवश्यकता होती है। वृहद् लोकनाट्य नौटंकी के सम्पूर्ण अध्ययन हेतु भी पूर्व में लिखे गए साहित्य संकलन के लिए भारत के विख्यात पुस्तकालयों के पुस्तकों की सूची में लोकनाट्य की छान–बीन का सतत् प्रयास नितांत आवश्यक है। प्रायः लेखकगण किसी विषय के लेखन हेतु अपने क्षेत्र के इर्द–गिर्द ही घूम कर विषय की इतिवृत्ति कर देते हैं। जिसके कारण विषय अधूरा ही रह जाता है। लोक नाट्य नौटंकी के साथ भी कुछ ऐसा ही रहा। लोक साहित्य के विद्वानों ने पहले तो इस ओर ध्यान ही नहीं दिया और जिन्होंने कुछ लिखा भी तो अपने क्षेत्र के इर्द–गिर्द ही घूमकर गणेश परिक्रमा कर ली। लोक नाट्य नौटंकी के नाम पर मात्र रामनारायण अग्रवाल की 'संगीत' पुस्तक ही प्राप्त होती है जिसमें हाथरस, मथुरा, अलीगढ़, आगरा, कानपुर, लखनऊ का ही इतिहास प्राप्त होता है। कैलिर्फोनिया विश्वविद्यालय की डॉ0 केथरीन कानपुर के कुछ कमरों तक सीमित रह गयीं। श्रीलंका के शोध छात्र उपुल रंजित ने राजकुमार श्रीवास्तव से लोक नाट्य नौटंकी की वृहद् सामग्री प्राप्त कर अपने शोध ग्रंथ में भरा हैं। सम्पूर्ण शोध अध्ययन हेतु आवश्कता है नौटंकी के गढ़ रहे समस्त क्षेत्रों के पुस्तकालयों से क्षेत्रीय समाचार पत्र, पत्रिकाओं के गहन अध्ययन तथा अवशेष नौटंकी के गुरूओं व नौटंकी के विद्वानों के साक्षात्कार व सर्वेक्षण की।*

नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी

ऐसे समय मे *''नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी''* विषय के तहत नौटंकी क्षेत्रो मे नौटंकी मण्डली और नौटंकी कलाकारों पर शोध नौटंकी को अक्षुण बनाये रखने के लिए बेहद जरूरी है। इसके लिए स्वर्ग रंगमण्डल ने संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों योजनान्तर्गत विगत 15 अप्रैल 2015 से परियोजना पर विधिवत कार्य आरम्भ किया।

इस परियोजना के तहत नौटंकी की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य पर गहन अध्ययन और विमर्श की रूपरेखा बनाई गई और विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए इस बात पर नौटंकी कलाकारों तक पहुंच बनाई गई कि नौटंकी का भविष्य कैसा है और भविष्य की नौटंकी कैसी होनी चाहिए। इस परियोजना के तहत निम्न गतिविधियां सम्पादित की गई –

1– कार्ययोजना का निर्धारण–

सर्वप्रथम संस्था स्वर्ग ने स्वीकृत बजट के क्रम मे गतिविधियों एवं कार्यो पर पुर्नविचार किया। उसके उपरान्त परियोजनान्तर्गत शोध सहायक, दस्तावेजीकरण, वीडियो एवं फोटोग्राफी सहायक और परियोजना समन्वयक पर अनुभवी तथा विषय मे रूचि रखने वाले सुपात्र व्यक्तियों का चयन किया गया। इसके बाद उन जनपदों को चिन्हित किया गया जहां पर नौटंकी एवं उसके कलाकार बहुतायत में है या लोकप्रिय रहे हैं। इन जनपदों मे प्रमुख रूप से हाथरस, मथुरा, इलाहाबाद, कौशाम्बी, आगरा, अलीगढ़, बुलन्दशहर, फिरोजाबाद, एटा, इटावा, झांसी, ग्वालियर, बरेली, शाहजहाँपुर, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बंदायूँ, रामपुर, मुरादाबाद आदि जनपद चयनित किये गये जिन्हें हम परियोजना मे 'नौटंकी जनपद के रूप में सम्बोधित करेंगे। सभी परियोजना से जुड़े कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। नौटंकी कलाकारों के सर्वेक्षण, नौटंकी मण्डलियों के सर्वेक्षण, लोकप्रिय कलाकारों के साक्षात्कार एवं राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट ख्याति प्राप्त नौटंकी कलाकारों के कैमरे के समक्ष साक्षात्कार के लिए प्रश्नावलियों का निर्धारण किया गया।

2– नौटंकी कलाकारों का सर्वेक्षण–

स्वर्ग रंगमण्डल के शोध सहायक अपने जनपदों में क्षेत्रीय कलाकारों के सहयोग से नौटंकी कलाकारों के सर्वेक्षण का कार्य शुरू किया और जो डाटा तैयार है उसको प्रथम रिपोर्ट के साथ संलग्न किया गया है और शेष अगली रिपोर्ट मे भेजा जायेगा।

3– नौटंकी मण्डलियों का सर्वेक्षण–

स्वर्ग रंगमण्डल के शोध सहायक अपने जनपदों में क्षेत्रीय मण्डलियों के सहयोग से नौटंकी मण्डलियों के सर्वेक्षण का कार्य शुरू किया और जो डाटा तैयार है उसको प्रथम रिपोर्ट के साथ संलग्न किया गया है और शेष अगली रिपोर्ट मे भेजा जायेगा।

4– लोकप्रिय नौटंकी कलाकारों का साक्षात्कार–

स्वर्ग रंगमण्डल के शोध सहायक अपने जनपदों में क्षेत्रीय मण्डलियों के सहयोग से लोकप्रिय नौटंकी कलाकारों का साक्षात्कार का कार्य शुरू किया और डाटा तैयार हो जाने के बाद अगली रिपोर्ट मे भेजा जायेगा। फोटो संलग्न है।

5– विशिष्ट ख्यातिलब्ध नौटंकी कलाकारों के साथ साक्षात्कार–

यह साक्षात्कार कैमरे के समक्ष होना है इसलिए इसके लिए विशिष्ट नौटंकी के ज्ञान, उनकी विशेषज्ञता और उनके द्वारा किये गये राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध कलाकारों को चिन्हित किया गया है। अब तक बुलन्दशहर, इलाहाबाद भदोही एवं आगरा के प्रमुख कलाकारों का साक्षात्कार कैमरे के समक्ष किया गया। निम्न DVD संलग्न है–

Sr	Name of DVD
1	ICH-SWARG ALLD-1
2	ICH-SWARG ALLD-2
3	ICH-SWARG ALLD-4
4	ICH-SWARG ALLD-5

6– मण्डली प्रमुखों के साथ समूह चर्चा –

यह गतिविधि अभी केवल इलाहाबाद, आगरा, पीलीभीत और लखीमपुर खीरी आदि जनपदों मे की गयी है। फोटो संलग्न है वीडियों बाद में भेजा जायेगा।

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Panel Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

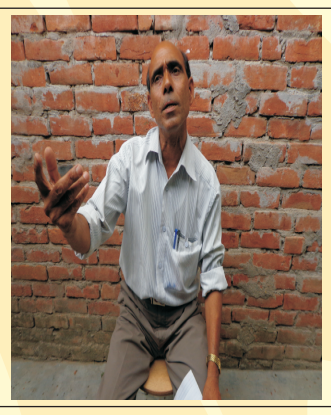

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Discussions with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad

In an Active Support of Sangeet Natak Akademi, New Delhi

'Safeguarding the Intangible Cultural Heritage & Diverse Cultural Traditions of India'

The Great Indian Folk Drama

'Nautanki'

"नौटंकी का भविष्य और भविष्य की नौटंकी"

Group Photographs with Nautanki Artists

Researched by: Society for Welfare & Advancement of Rural Generations (Swarg Repertory), Allahabad